ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 40, अंक 08, फरवरी 2005, मूल्य 5.00

1. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- 'स्वस्थ जीवन पद्धति में नये आयाम' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित हैं अमेरिका से पधारे सुप्रसिद्ध चिकित्सक, वक्ता तथा लेखक डॉ. भ्राता दीपक चोपड़ा परिवार सहित, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी, डॉ. भ्राता अशोक मेहता, ब्र.कु. डॉ. बनारसी भाई तथा भारत के कोने-कोने से पधारे चिकित्सकगण। 2. नई दिल्ली (विज्ञान भवन)- 'सम्पूर्ण विकास की दिशा में वैज्ञानिक जागृति' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री भ्राता प्रकाश जायसवाल, केन्द्रीय हाइड्रोलिक पॉवर लिमिटेड के अध्यक्ष एवं मुख्य प्रबन्धक भ्राता योगेन्द्र प्रसाद, गुरुगोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता के.के. अग्रवाल, ब्र.कु. सुरेश गुप्ता, कृभको के प्रबन्ध निदेशक भ्राता वी.एन. राय, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई तथा रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. भ्राता एम. नटराजन।

1. अहमदनगर- भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम भ्राता भैरोंसिंह शेखावत को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राजेश्वरी बहन तथा ब्र.कु. दीपक भाई। **2. बुटवल-** नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता शेरबहादुर देउवा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कमला बहन। साथ में हैं शिक्षा तथा खेलकूद राज्यमंत्री भ्राता बालकृष्ण खांड। **3. भुवनेश्वर-** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता रामेश्वर ठाकुर जी का गुलदस्ते से स्वागत करती हुई ब्र.कु. लीना बहन। **4 सूरत-** वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय में 'मूल्यों में डिप्लोमा' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कार्यकारी कुलपति जयेश भाई देशकर, ब्र.कु. मृत्युंज्जय भाई, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. डेनिस बहन तथा ब्र.कु. लता बहन। **5. वारंगल-** आंध्र प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री भ्राता लक्ष्मीकांत राव तथा उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अरुणा बहन तथा ब्र.कु.·सुजाता बहन। **6. नेपालगंज (नेपाल)-** उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता रामकुमार प्रसाद शाह का आत्म-स्मृति का तिलक देकर स्वागत करती हुई ब्र.कु. दुर्गा बहन। **7. वर्धा-** महाराष्ट्र के सार्वजनिक बांधकाम मंत्री भ्राता छगनराव भुजबल का पुष्पगुच्छ से स्वागत करती हुई ब्र.कु. माधुरी बहन। **8. रांची-** आध्यात्मिक समारोह का उद्घाटन करते हुए कृषि वि.वि के कुलपति भ्राता एस.एन. पाण्डे, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता अनुराग गुप्ता, आनन्दमयी आश्रम के प्रमुख भ्राता नवकुमार तथा ब्र.कु. निर्मला बहन।

– संजय की कलम से

बंधनमुक्त

आज हम देखते हैं कि हरेक मनुष्य किसी-न-किसी बुरी आदत का शिकार है। हरेक में कोई-न-कोई विकार और बुरा संस्कार है। कोई किसी दुर्व्यसन में फँसा है, कोई किसी वासना में। एक मनुष्य को सिग्रेट की ऐसी लत पड़ी है कि वह चाहता तो है कि इस आदत को छोड़ दे परन्तु यह उसके लिए सम्भव नहीं है। दूसरा कोई काम विकार का नशा पीये रहता है और उसकी दृष्टि तथा वृत्ति में काम सदा डेरे जमाये रहता है। तीसरे का स्वभाव ऐसा है कि वह छोटी-छोटी बातों पर भी अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है और आवेश तथा क्रोध में आकर अपनी आकृति-प्रकृति को विकृति में ले आता है तथा अन्य लोगों को भी अशान्त करता है। चौथा व्यक्ति अर्थ-वित्त के लोभ में ही फँसा हुआ है और सदा अतृप्त एवं असन्तुष्ट अनुभव करता है तथा अपने लिए धन-माल बटोरने में ऐसा लगा रहता है कि दूसरों के भले का ज़रा भी ख्याल नहीं करता। पाँचवें को हम देखते हैं कि वह मोह-ममता में ही जकड़ा है। माँ अपने पुत्र के, पिता अपने सुत के शारीरिक सम्बन्ध में ऐसे तो आसक्त हैं कि वह थोड़ा ही उनकी आँखों से दूर हो तो उनका मन व्याकुल हो उठता है। छठवाँ सदा अहंकार का मद पीये रहता है। जब भी उससे बात करो, उसके मुख से अभिमान की दुर्गन्ध आती है। वह स्वयं को ऐसा समझता है कि उस जैसा अन्य कोई संसार में है ही नहीं। सातवाँ ऐसा आलसी है कि वह कार्य या सेवा का तो परम शत्रु है। सदा ऐसा बैठा रहता है जैसे उसने भांग का बड़ा प्याला पी डाला हो। 'ओ सुस्ती, तेरा ही आसरा' – यही उसके जीवन का मूल सूत्र मालूम होता है। आठवें को हम देखते हैं कि उसके मुँह को बोतल लग गई है। वह शराब और कबाब उड़ाने में ही लगा रहता है। इस प्रकार सभी नर-नारी, युवा-वृद्ध, बालक-बालिकायें किसी-न-किसी संस्कार, विकार, व्यसन या आदत रूपी पिंजरे के कैदी हैं।

वास्तव में अपने आदिम स्वरूप में तो हरेक आत्मा पवित्र है और इन दुर्व्यसनों से मुक्त है। परन्तु इस संसार में जन्म-मरण के चक्र में आकर वह देह-दृष्टि और मोह-ममता के अधीन होते-होते इन विकारों तथा व्यसनों के कुचक्र में फँस जाती है। फिर वह संगदोष, अन्नदोष आदि दोषों के कारण इनकी दलदल में और अधिक धँसती जाती है। एक समय ऐसा आता है कि सभी आत्मायें रूपी स्वतन्त्र पंछी इन पिंजरों की लोह-दीवारों के कैदी हो जाते हैं और कोई भी मुक्त नहीं रहता जो छुड़ा सके। तब सभी

शेष पृष्ठ.....20 पर

अमृत-सूची

★

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	60/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	60/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	550/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	550/-	6,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–

09414423949, 09414154383

सम्पादकीय ....

निर्मलता मिटाएगी निर्बलता

आजकल अक्सर यह सुनने में आता है कि पहले के समय की भेंट में मनुष्यों की शारीरिक शक्ति अब क्षीण होती जा रही है। वे समय से पहले जरा, रोग और मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। एक बालक किशोरावस्था तथा युवावस्था का आनन्द लेने से पहले ही वृद्धावस्था का वरण करता नज़र आता है। इसके पीछे कारण यह माना जाता है कि आज खाद्य पदार्थों में पहले जैसी निर्मलता नहीं है। पाँच तत्वों में प्रदूषण है। उनसे उत्पन्न सभी खाद्य पदार्थ पौष्टिकताविहीन होते जा रहे हैं। इस कमी को दूर करने के लिए जिन कृत्रिम खादों और कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है, वे खाद्य की उत्पादन क्षमता को अल्पकाल के लिए भले ही बढ़ा देते होंगे परन्तु पौष्टिकता को बढ़ाने में पूर्णतया असमर्थ हैं, अत: प्राचीन काल का वह यौवन जिसके बारे में प्रसिद्ध कहावत है 'एड़ी मार कर ज़मीन से पानी निकालने वाला' आज कहीं नज़र नहीं आता। निस्संदेह, प्रकृति में, वातावरण में, मानवीय व्यवहार में दिनों-दिन घटती निर्मलता ही इसका मुख्य कारण है। व्यक्ति के बीमार होने पर, उसका पुन: स्वस्थ होना भी निर्मल दवा-दारू पर निर्भर करता है। यदि दवाई मिलावट वाली, नकली या अनुपयुक्त हो तो रोगी लम्बे समय तक बिस्तर पकड़े रहता है और हज़ार प्रयास करने पर भी सेहत-सुख की उपलब्धि नहीं कर पाता है। रोगी की शारीरिक निर्बलता की समाप्ति के लिए भी उपचार की निर्मलता (शुद्धता) चाहिए।

उपरोक्त दो उदाहरणों से स्पष्ट हो रहा है कि चाहे किसी भी प्रकार की निर्बलता हो, मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक या नैतिक उसका कारण मलीनता है अर्थात् निर्मलता का न होना है। मानव अक्सर भगवान को कहता है – 'हे निर्बल के बल राम! हे सर्व शक्तिवान! मुझ अबल को सबल बनाइये।' यह सच है कि भगवान सर्वशक्तिवान हैं, भीड़ पड़ने पर अपने भक्तों और बच्चों की पीर हरते हैं, उन्हें सम्बल देकर सबल बनाते हैं। तभी उनके 'सर्वशक्तिवान', 'सर्व समर्थ', 'सर्वशक्ति सम्पन्न' आदि-आदि नाम गाए जाते हैं। परन्तु प्रश्न उठता है कि भगवान शक्ति कैसे प्रदान करें?

जिस प्रकार,शारीरिक कमज़ोरी का कारण मलिन खाद्य, पानी, हवा है उसी प्रकार मानसिक कमज़ोरी का कारण भी मन के विकारी संकल्प हैं। मन के विचारों में जितनी ज्यादा मलीनता, विकार, नकारात्मकता, झूठ, स्वार्थ, परचिन्तन भरा होगा तो वह आत्मा हर कदम पर अपने को अशक्त, कमज़ोर, निर्बल, अधीन, आधारित, उदास, कर्मेन्द्रियों की दास, चिड़चिड़ी, अशान्त, निराश, परेशान, तनावग्रस्त, अस्थिर और सन्देहों से घिरी हुई महसूस करेगी। अत: भक्तजन यदि सच्चे हृदय से सबल बनना चाहते हैं तो उन्हें मन की मलीनता को खत्म कर निर्मल बनना पड़ेगा।

कई कहते हैं कि हम तो मलीनता को खत्म करने को तैयार हैं और इसलिए ही प्रतिदिन भगवान को कहते हैं – 'विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा; मैं मूर्ख-खल-कामी, कृपा करो भर्ता' तो हमारी इस पुकार को सुन कर भगवान को हमारे मन का मैल हर लेना चाहिए और हमें बल प्रदान कर देना चाहिए। परन्तु विचार कीजिए, यदि कोई बालक रोज़ाना विद्यालय के द्वार पर जाकर, अपने अध्यापक की आरती

उतारे और कहे कि मेरी अज्ञानता हर लीजिए, तो क्या अध्यापक उसे लौकिक विद्या से विभूषित कर देगा? नहीं। इसके लिए विद्यार्थी को प्रतिदिन विद्यालय में पढ़ना पड़ेगा, शिक्षक की आज्ञानुसार चलना पड़ेगा और पाठों को याद करना, लिखना, सुनाना इस प्रकार का अभ्यास करना पड़ेगा।

ठीक इसी प्रकार, **सर्वशक्तिवान होते हुए भी परम दयालु परमात्मा अपने बच्चों की प्रार्थना सुनते हैं और शक्ति रूपी वर्सा उन्हें देना चाहते हैं। परन्तु शक्ति कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो भिखारी के कटोरे में पैसा डालने की तरह, आत्मा रूपी बच्चों की बुद्धि में डाली जा सके। जिस प्रकार शान्ति की अनुभूति शान्ति के चिन्तन से होती है। सुख की अनुभूति, सुख की बातों के चिन्तन से होती है। प्रेम की अनुभूति प्रेम की बातों के चिन्तन से होती है। उसी प्रकार, शक्ति की अनुभूति शक्तिशाली विचारों में रमण करने से होती है। भक्तों की जन्म-जन्म की यह पुकार – 'मुझ निर्बल को बल प्रदान करो। हे निर्बल के बल राम' आदि सुन कर भगवान शिव धरा पर अवतरित हो चुके हैं और आत्माओं की निर्बलता हटाने के लिए निर्मलता अर्थात् पवित्रता का वरदान उन्हें प्रदान कर रहे हैं। भगवान कहते हैं – बच्चे! अपने को आत्मा समझ, देह के भान से न्यारे हो जाओ और मुझ अपने पिता परमात्मा को याद करो तो इस दुनिया की कोई अशुद्धि, मलीनता आपके मन, वचन, कर्म में प्रवेश नहीं करेगी और जब जीवन निर्मल बन जाएगा तो निर्बल नहीं रहेगा। याद रखिए, जहाँ निर्मलता है वहाँ निर्बलता नहीं रह सकती।**

आज की सरकारें विभिन्न वर्गों को सशक्त करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की घोषणाएँ करती हैं। ग्राम सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण, पुलिस सशक्तिकरण आदि के नाम पर करोड़ों रुपया खर्च किया जाता है। परन्तु इस प्रकार की योजनाओं के निमित्त व्यक्तियों से हमारा नम्र निवेदन है कि सशक्तिकरण का सच्चा आधार मन का सशक्त होना है और मन को सशक्त करने का आधार शुद्ध, पवित्र, शक्तिशाली और शुभ विचार हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी शाखाएँ सच्चे अर्थों में सशक्तिकरण केन्द्र हैं जहाँ हर वर्ग के हर व्यक्ति का सशक्तिकरण निःस्वार्थ भाव से और निःशुल्क किया जाता है। सशक्त वही हो सकता है जो कहीं भी आसक्त न हो। आसक्ति, शक्ति को नष्ट करती है। वस्तु, व्यक्ति, पदार्थों और वैभव में आसक्त होने के बजाए यदि परमप्रिय परमात्मा में आसक्ति (प्रेम और आकर्षण) रखी जाए तो उस परम शक्तिवान का संग हमारी शक्तिहीनता को मिटा देता है, हमें सशक्त बना देता है। इसके लिए चलते-फिरते, उठते-बैठते यह अभ्यास करने की ज़रूरत है – "मैं सर्वशक्तिवान की सन्तान सशक्त आत्मा हूँ, मेरा आदि (सतयुग का देवताई) और अनादि (शुद्ध आत्मिक) रूप पूर्ण सशक्त है। शक्ति मेरा निजी गुण है। मैं सर्वशक्तिवान की छत्रछाया में हूँ। सर्वशक्तिवान का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है। सर्वशक्तिवान का अविनाशी पुत्र होने के कारण सर्व ईश्वरीय शक्तियों पर मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। सर्व आध्यात्मिक, नैतिक, मानसिक शक्तियाँ मेरा वर्सा हैं, जो मुझे परमात्मा पिता से निरन्तर मिल रही हैं।" 'जैसा चिन्तन, वैसा जीवन' और 'हिम्मते मर्दा मददे खुदा' की कहावत के अनुसार नित्यप्रति ऐसा चिन्तन करने से मन की निर्बलताएँ और निर्बलता से उत्पन्न मलीनताएँ जैसे कि काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, बदला, निराशा, विकर्म, अहंकार, सुस्ती आदि समूल नष्ट हो जाते हैं और आत्मा पूर्ण निर्मल अर्थात् पवित्र बन जाती है।

– ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश

पुरुषोत्तम संगमयुग और विश्व परिवर्तन में पाँच तत्वों का योगदान

– ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी (मुम्बई)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में, त्रिकालदर्शी परमपिता शिव परमात्मा अपनी शिक्षाओं द्वारा भविष्य के बारे में पहले से ही सूचना दे देते हैं। परिणामस्वरूप हम भविष्य जीवन की सही तथा श्रेष्ठ योजना बना सकते हैं। मातेश्वरी मम्मा कई बार कहती थी – 'किसकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाए, किसकी चोर लूट ले जाए, किसकी आग जलाए ....' अर्थात् विनाश के समय धन-दौलत कई प्रकार से नष्ट हो जायेंगे और सफलता उसी की होगी जो ईश्वर-अर्पण करेगा। विश्व परिवर्तन के बारे में शिव बाबा ने तीन साधन बताए हुए हैं – 1. प्राकृतिक आपदाएँ, 2. गृह-युद्ध तथा 3. अन्तर्राष्ट्रीय अणु-युद्ध। समय-प्रति-समय शिव बाबा कहते हैं कि बच्चे, समय बहुत नाज़ुक है, समय बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। प्रकृति के पाँचों तत्व भी अब तंग हो गए हैं। वे भी इन्तज़ार में हैं कि हम कब मिल कर अपना कार्य शुरू करें? अभी तक तो ये तत्व अलग-अलग ही अपना-अपना काम करते आए हैं। इनमें से पृथ्वी और जल का आपस में बहुत ही गहरा सम्बन्ध है क्योंकि दशावतार में भी तीन अवतारों का सम्बन्ध पृथ्वी और जल के साथ दिखाया गया है। प्रथम अवतार – मत्स्यावतार में दर्शाया गया है कि जब संन्यासी ने अपने कमण्डल से मछली को जल में छोड़ दिया तो आकाशवाणी हुई कि थोड़े ही समय में जल-प्रलय होने वाली है। उसके पहले एक बहुत बड़ी नाव तैयार करके और उसमें 6 पुरुष और एक स्त्री तथा सर्व जड़ी-बूटियाँ रख कर तैयार रहना। प्रलय के समय परमात्मा मत्स्य अवतार के रूप में आकर नाव को नई दुनिया की तरफ लेकर जायेंगे। मत्स्यावतार की कल्पना अलग-अलग धर्मों में अलग-अलग नामों से मिलती है।

दूसरे अवतार – वाराह अवतार की कथा में आता है कि पृथ्वी समुद्र के अन्दर गिरती जा रही थी। उस समय वाराह के रूप में अवतरित होकर परमात्मा ने अपने मुख के आगे के दाँतों से पृथ्वी को पकड़ कर बाहर निकाला। तीसरे अवतार कुर्म अवतार में भी दिखाया है कि पृथ्वी पानी के अन्दर डूब रही थी और परमात्मा ने कुर्म अर्थात् कछुए के रूप में अवतार लेकर अपनी पीठ पर पृथ्वी को उठा लिया और ऊपर ले आए। इन तीनों ही अवतारों में पृथ्वी और जल के संघर्ष की बातें हैं।

हिन्द महासागर में सुमात्रा के नज़दीक जो अभी भूकम्प आया, उससे उत्पन्न विनाशकारी लहरें चारों ओर फैल गईं। करीब डेढ़ लाख लोगों ने अपना अमूल्य जीवन गँवाया और अरबों रुपए की सम्पत्ति भी नष्ट हो गई। एक ही तत्व के द्वारा यह विनाशकारी कार्य हुआ। इस भूकम्प से जो लहरें उछलीं उन्हें अंग्रेजी में 'सुनामी लहरें' कहते हैं। सुनामी शब्द जापानी शब्द है जिसमें सु (Tsu) अर्थात् बंदरगाह तथा नामी (Nami) अर्थात् लहरें। ये लहरें सामान्य नहीं होती हैं, ये बहुत तीव्र गति से उछलती हैं और काफी दूर तक जाती हैं। इनके लिए वैज्ञानिक उपकरण उपलब्ध हैं जिनसे पता चलता है कि ये कितनी

दूर तक जायेंगी और कितना नुकसान करेंगी ? सन् 1960 में चिली, दक्षिण अफ्रीका में भी विनाशकारी समुद्री भूकम्प आया था जिसकी लहरें जापान तक आई थीं तथा जापान के करीब 200 व्यक्ति मारे गए थे। लगभग 30-40 वर्ष पहले मुम्बई में भी ऐसा भूकम्प छोटे स्तर पर आया था और बंदरगाह पर लहरें करीब 10-15 मीटर ऊपर तक उछली थीं। अभी की सुनामी लहरें उद्‌गम स्थान पर 25-40 मीटर ऊँचाई तक थीं और वे समुदी तटों की तरफ जाने लगी थीं। उनकी गति जेट हवाई जहाज की गति के समान थी। उस समय तटीय स्थानों के रहवासियों ने देखा कि समुद्र का पानी तट से दो-तीन फर्लांग अन्दर चला गया और फिर पूरी ताकत से तट की तरफ आया। यह सब इतनी गति से हुआ कि लोगों को भागने तक का समय नहीं मिल पाया। चेन्नई के मरीना बीच पर भी इन लहरों ने अपना ताण्डव दिखाया और वहाँ घूमने के लिए आए लोगों का तथा लाफिंग क्लब में आए लोगों का बहुत नुकसान हुआ। श्रीलंका, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड आदि देशों में भी काफी नुकसान हुआ। एक समाचार-पत्र के अनुसार इस भूकम्प की ताकत 10 लाख एटम बम की ताकत के बराबर थी। इससे हम अन्दाजा लगा सकते हैं कि कुदरत में कितनी ताकत है। आगे चल कर इससे भी अधिक शक्तिशाली भूकम्प आयेंगे तो उनमें कितनी ताकत होगी और उसके द्वारा कितना नुकसान होगा!

पृथ्वी के अन्दर एक मैग्नेट प्लेट होती है जिसके द्वारा नॉर्थ पोल तथा साउथ पोल का पता चलता है। इस भूकम्प में यह प्लेट हिल गई है। बाबा कहते हैं कि सतयुग का वातावरण सदा ही सर्वश्रेष्ठ रहता है। वर्तमान पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव में $23^{1}/_{2}^{0}$ का फर्क है। सर्वश्रेष्ठ वातावरण के लिए यह जो फर्क है वह नहीं रहेगा। इससे यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी पर कुदरती आपदाओं के कारण काफी कुछ परिवर्तन होगा। पृथ्वी अपने अक्ष पर सीधी घूमेगी। मुम्बई के अखबारों में आया है कि अगर यह भूकम्प मुम्बई के पास अरब सागर में होता तो करीब 35-40 मीटर लहरें उठतीं और बहुत नुकसान हो जाता। बाबा कहते हैं कि मुम्बई समुद्र में चली जायेगी अर्थात् समुद्री तटवर्तीय स्थानों के अन्दर कभी भी पानी जा सकता है। ऐसे शहरों को भविष्य की योजना बना लेनी चाहिए। शिव बाबा ने हम बच्चों को यह सावधानी पहले से ही दी हुई है। धीरे-धीरे हम प्रकृति की विनाशक शक्ति का अनुभव करते जायेंगे और पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे। अखबार में आया है कि सुनामी लहरों के एक-डेढ़ घण्टा पहले ही सभी जानवरों को मालूम हो गया था और वे शहरों के आन्तरिक हिस्सों में चले गए थे। यह भी एक विचित्र बात है कि मनुष्य आने वाली विपत्तियों को समझ नहीं सकता है और पशु-पक्षियों में ऐसी शक्ति है कि वे आने वाली विपत्ति को समझ जाते हैं। सोमनाथ-वेरावल के आस-पास के क्षेत्रों में भी भूमि के नीचे धमाके होते रहते हैं जिससे लगता है कि पृथ्वी के अन्दर भूकम्प आदि की हलचल हो रही है। अभी तो यह हलचल इतनी तीव्र नहीं है परन्तु आगे चल कर यह बहुत तीव्र हो सकती है इसलिए हमें सावधान होने की ज़रूरत है।

सुनामी लहरों के उठने से पानी के साथ-साथ समुद्र के अन्दर की रेत भी तटों पर आ गई और जब लहरें वापिस गईं तो तट पर रेत का 10-12 फुट ऊँचा टीला बन गया। कई लोग इस रेत के टीले में दफन हो गए। समुद्र में ज्वार-भाटा भी आता है जिसके आते और जाते दोनों समय ही पानी में तीव्र शक्ति होती है। जाते समय पानी अपने साथ कई चीज़ें खींच कर ले जाता है। जिन्होंने समुद्र में स्नान किया है उन्हें मालूम है कि जब लहरें जाती हैं तो अपना सन्तुलन

बनाना कितना मुश्किल होता है। साधारण लहरों में भी ताकत होती है तो जो विनाशकारी लहरें हैं उनमें कितनी ताकत होगी ? ये लहरें जाते समय अपने साथ मनुष्यों तथा कई चीज़ों को ले गईं। इस कारण मरने वालों की संख्या का अभी तक सही पता नहीं चल पाया है। सुनामी लहरों का भूकम्प इतना तीव्र था कि रिक्टर पैमाने पर इसे 9.1 आँका गया। जैसे लुहार अपनी चीज़ों को बनाने के लिए बार-बार हथौड़े मारता है वैसे ही एक बार आने के बाद भूकम्प बार-बार आता रहता है। धीरे-धीरे ही धरती शान्त स्वरूप में आती है। बाबा के ज्ञान के अनुसार इन लहरों का कारण है दुनिया में बढ़ता हुआ पापाचार, भ्रष्टाचार आदि। इनका मनुष्यों पर तो प्रभाव पड़ता ही है साथ-साथ प्रकृति के पाँच तत्वों पर भी पड़ता है। इसलिए बाबा ने कहा है कि प्रकृति भी अब तंग हो गई है। इन प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा ही सृष्टि-परिवर्तन होगा, यह बात हम राजयोगी वत्सों को अच्छी तरह मालूम है। अत: समय की नाजुकता को देखते हुए हम स्व-परितर्वन के द्वारा विश्व-परिवर्तन के कार्य में मदद करें, साथ-साथ तन-मन-धन तीनों ही सफल करें, यही इस लेख का उद्देश्य है।

❖❖❖

प्रेम और मोह में अन्तर

– ब्रह्माकुमारी मंजू चोटिया, चूरू

प्रेम और मोह में वही अन्तर है जो काया और छाया में है। काया (शरीर) में जीवन होता है और छाया निष्प्राण होती है। छाया को देखकर वास्तविकता का भ्रम तो हो सकता है पर उससे काया का प्रयोजन पूरा नहीं हो पाता। प्रेम का आरम्भ किसी व्यक्ति से हो तो सकता है, पर उस तक सीमित नहीं रह सकता। यदि सीमित रह जाता है और कुछ पाने की कामना करता है तो वह मोह बन जाता है। प्रेम में पाने की नहीं देने की उमंग रहती है। मोह आदान-प्रदान और उपभोग की कामना करता है। प्रेम वस्तुओं से जुड़कर परमार्थ की बात सोचता है। मोह में व्यक्ति, पदार्थ और संसार से किसी न किसी प्रकार का स्वार्थ जुड़ा रहता है। जिसके प्रति मोह होता है उसे अपनी इच्छा अनुसार चलाने की लालसा रहती है। इसमें व्यवधान पड़ने पर खीज, झुंझलाहट और असंतोष का उद्वेग उमड़ता है। प्रेम इस तरह की कोई कामना नहीं करता। वह तो दूसरों के हित चिन्तन और उनके प्रति कर्त्तव्यों को पूरा करने में ही संतोष अनुभव करता है।

प्रेम रूपी इत्र जहाँ छिड़का जाए वहीं सुगंध पैदा करेगा। उससे आदर्शों की उच्चता जुड़ी रहती है। मोह में अपने प्रिय पात्र को ऊँचा उठाने की क्षमता नहीं होती। मोह, हीनता से समझौता कर सकता है, प्रेम नहीं। दूरदर्शिता, विवेकशीलता, शालीनता, पवित्रता जैसे गुणों का भरपूर समावेश प्रेम में होता है, मोह में नहीं। प्रेमी जिससे प्रेम करता है उसमें इन्हीं गुणों की अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है। मोह इन विशेषताओं से रहित होता है। सूर्य पूर्व दिशा से उदय तो होता है किन्तु उसका प्रकाश समस्त दिशाओं में फैल जाता है। बादल समुद्र से निकलते तो हैं पर उसी क्षेत्र में नहीं बरसते, सर्वत्र अपना जल बिखेरते हैं। यही उच्च कोटि के प्रेम की विशेषता होती है। उसका आरम्भ सगे-सम्बंधियों से भले ही हो परन्तु उतने तक ही सीमित न रहकर समाज, राष्ट्र और पूरे विश्व में विकसित होना चाहिए। समस्त मानव जाति की सेवा में रत होना चाहिए।

मनुष्य के सुन्दरतम जीवन से प्रेम को निकाल दिया जाए तो उसमें कोई विशेषता नहीं रह जाती। उसका शुष्क, नीरस हृदय मरघट के पिशाच की भाँति सदा अतृप्त और अशान्त बना रहता है। अपने जीवन को उच्च और महान बनाने के लिए व्यक्ति को मोह रूपी छाया को छोड़ना होगा और प्रेम रूपी जीवन्त काया को पकड़ना होगा। निष्काम प्रेम में वह शक्ति है जो प्रवाह बनकर फूटती है, हजारों लोगों के जीवन में आनन्द का स्त्रोत बनकर उमड़ पड़ती है और लाखों के पाषाण हृदयों (अन्त:करणों) को धोकर निर्मल बना देती है। ❑

सात आश्चर्य

– ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

हम सभी भिज्ञ हैं कि भारत सहित विश्व के अन्य कई देशों में वास्तुशिल्प के उत्कृष्ट नमूने हैं जो मानव निर्मित हैं। इनमें से मुख्य 7 को संसार के सात आश्चर्यों की संज्ञा दी गई है। ये हैं – चीन की दीवार, पीसा की मीनार, मिस्र के पिरामिड्स, भारत का ताजमहल, अमेरिका का लिबर्टी स्टेच्यू, फ्रांस का आइफल टावर और ऑस्ट्रेलिया का आपेरा हाउस। ये नमूने तो दृश्य हैं, परन्तु आज के मानवों से जुड़ी कुछ ऐसी अमूर्त बातें, जो प्रतिदिन उनके कर्म-व्यवहार में झलकती हैं, इन सात अजूबों से कम विस्मयकारी नहीं हैं। आइए देखें, वे कौन-कौन-सी बातें हैं –

1. मनुष्य सारा जीवन देहभान में रहते हैं और ''आत्मिक स्वरूप'' से अनभिज्ञ रहते हुए आयु पूरी कर लेते हैं। वे खुद के मौलिक अर्थात् अति सूक्ष्म, अभौतिक, अजर, अमर, अविनाशी, चैतन्य ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप को जानते नहीं। जाहिर है कि इससे आत्मिक गुण व शक्तियों के अविनाशी खज़ानों का उपयोग नहीं हो पाता। ऐसे मनुष्यों को जब उनके वास्तविक स्वरूप के बारे में बताया जाए और वे फिर भी ''खुद'' को न जानना चाहें तो इससे बड़ा आश्चर्य विश्व में और कुछ हो नहीं सकता। आध्यात्मिक ज्ञान-प्रकाश ही वह साधन है जिसमें खुद (आत्मा) व खुदा (परमात्मा) दोनों नजर आते हैं।

बताया जाता है कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटिन की मृत्यु के उपरान्त उनके मस्तिष्क को सुरक्षित रख लिया गया था ताकि उसकी जाँच से यह पता लगाया जाए कि आइन्सटिन इतना बुद्धिमान कैसे था। यह तो वह बात हुई कि दौड़ में प्रथम आई कार का इंजन उतार कर यह जाँचने के लिए रख लिया जाए कि कार इतनी तेज़ कैसे चली और कार के चालक का नाम, पता आदि कुछ न पूछा जाए। विश्व की सात श्रेष्ठ भौतिक कलाकृतियों पर आश्चर्य करना, उनकी उत्कृष्टता, भव्यता व सुन्दरता का बखान करना और उनकी रचयिता – आत्माओं के गुण-शक्तियों का जिक्र तक न करना – यह भी एक हैरानी वाली बात है। विश्व के सभी श्रेष्ठ कार्य, शारीरिक यंत्र को माध्यम बना कर चैतन्य आत्माओं ने किए हैं।

2. परमात्मा के अस्तित्व को विश्व के सभी मजहब, धर्म या सम्प्रदायों द्वारा स्वीकार किया जाता है परन्तु उनके नाम, धाम, रूप, गुण व शक्तियों के बारे में व्याप्त विषमता एक विचित्र आश्चर्य है। उनकी आराधना करने के तरीकों में और भी विषमतायें हैं। परमात्मा को मानना और परमात्मा की श्रीमत को न मानना और फिर भी उनसे मनोकामनायें पूरी करने की याचना करना एक आश्चर्य का विषय है। कर्म तो हों आसुरी प्रवृत्ति के और फल मिले सतयुगी सुख का या पौधा लगाया जाए बबूल का और आकांक्षा की जाए आम के फल की तो यह एक घोर आश्चर्य की बात है। यह आश्चर्य की और भी पराकाष्ठा है कि एक तरफ तो परमात्मा को सर्वव्यापी कह दिया जाए और दूसरी तरफ उसे मन्दिरों में पुकारा जाए, बुलाया जाए कि आओ, हमारे दु:ख-दर्द दूर करो।

कोई कार्य सफल हो जाए तो ''मैंने किया या मैं सफल हुआ'' और कार्य असफल हुआ तो 'ऊपर वाले की मर्ज़ी'। कोई विपदा आ जाए तो प्रभु पार लगाओ, साथ दो और सुख-सम्पदा आ जाए तो संगी-साथी साथ दें। कोई त्योहार आ जाए तो उस दिन सात्विक खान-पान हो और बाकी के सब दिन तामसिक खान-पान हो। रुका हुआ कार्य सिद्ध हो जाए, इसके लिए 101 रुपये के प्रसाद (रिश्वत) का वादा और प्रात: पूजा के समय कोई फायदेमंद कार्य आ जाए तो उस दिन पूजा की छुट्टी। इस प्रकार की अनेक विषमताएँ ऐसी हैं जिन पर मनुष्यों को खुद पर आश्चर्य करना चाहिए। उनका आश्चर्य ना करना एक महान आश्चर्य है।

3. शारीरिक मृत्यु, जीवन का परम सत्य है। यह एक महान आश्चर्य है कि मृत्यु के सत्य को जानते, स्वीकारते हुए भी मनुष्य सारी उम्र, यहाँ तक कि मृत्यु-शय्या पर भी भौतिकता में फंसा रहता है। अपने लौकिक जीवन में छोटी-छोटी शारीरिक यात्राएं करने वाला मनुष्य हर यात्रा के पहले उसकी तैयारी करना जानता है। यात्रा में क्या-क्या सामान साथ ले जाना है, कितना धन, कपड़े-लत्ते इत्यादि साथ ले चलने हैं, वह यात्रा शुरू करने से पहले, सब तैयारी कर लेता है। परन्तु अन्तिम यात्रा से पहले की तैयारी करना न वह जानता है और न जानना चाहता है। उसमें इसकी जिज्ञासा नहीं कि इस जीवन से पहले और इस जीवन के बाद है क्या। शारीरिक मृत्यु से हो ''डर'' और परम उपलब्धि के तौर पर कामना हो ''मोक्ष'' की अर्थात् जिस शरीर से इतना मोह है वह कभी प्राप्त ही ना हो, यह आध्यात्मिक अज्ञानता का ही परिचायक है। मोक्ष के संबंध में फैला भ्रम एक आश्चर्य ही है।

शरीर पैदा होते ही विकास की ओर नहीं बल्कि समाप्ति की ओर बढ़ता है। दीपक जबसे जलना शुरू करता है, तभी से बुझने लगता है। महत्त्व इस बात का है कि दीपक रोशनी फैलाता है या घर को ही जला देता है। दर्पण के सामने दीपक का प्रकाश दुगुना हो जाता है। ज्ञान-दर्पण के सामने खड़े होकर आत्म अवलोकन किया जा सकता है जो फिर निरन्तर जल रहे, भटक रहे मन को शीतल ज्ञान-प्रकाश से आलोकित कर ''शारीरिक मृत्यु'' को भी सहज आनन्दमय बना देता है।

4. मनुष्य शारीरिक कष्ट, वेदना की अनुभूति रखते हैं। खुद की चोट तो क्या, सन्तान को लगी चोट पर भी दर्द का अनुभव करते हैं। यह सभी स्वीकार करते है कि हिंसा बहुत बड़ा पाप है और ऐसे पाप को परमात्मा माफ नहीं करते। एक बच्चा भी अपने माता-पिता से अहिंसा का प्रथम पाठ अल्पायु में प्राप्त करता है। शिक्षा के दौरान स्कूल में आपस की छोटी-मोटी हिंसा पर दण्ड का नियम लागू होते देखता है और व्यस्क होने पर हिंसा की रोकथाम के लिए कानून व अदालतों की व्यवस्था देखता है। फिर भी पशु-पक्षियों पर हो रही हिंसा की कोई रोकथाम नहीं है । मानो यह हिंसा है ही नहीं। खुद को परमात्मा की रचना मानने वाला मनुष्य क्या यह सोचता है कि पशु-पक्षियों की रचना किसी और परमात्मा ने की है? यदि परमात्मा एक ही है तो अहिंसा के प्रति उसकी श्रीमत, उसकी रचना मनुष्य एवं पशु-पक्षी सभी के प्रति एक समान ही होगी। कुदरत ने मनुष्यों को एक से बढ़कर एक फल-सब्जियां व अनाज उपलब्ध कराए हैं। एक ही प्रकार की फल, सब्जियां निरन्तर खाना अरुचिकर न हो जाए इसलिए अलग-अलग मौसम में अलग-अलग प्रकार के फल व सब्जियां प्रस्तुत किए हुए हैं। इन सब तथ्यों के बावजूद मनुष्य पशु-पक्षियों की हत्या कर उनका भक्षण करते हैं और इस महापाप को पाप नहीं समझते। **पेट में मांसाहार लिए मनुष्य जब हाथ जोड़कर भगवान की पूजा-अर्चना करता है तो क्या भगवान ऐसे भक्त को ''तथास्तु'' का वरदान देंगे? यह एक घोर-घोर आश्चर्य का विषय है कि इतनी स्पष्ट बात भी मनुष्यों की इतनी सूक्ष्म बुद्धि में क्यों नहीं कौंधती। हिंसा जैसा अधर्म व घृणित कार्य करने वाला या मांसाहारी मनुष्य आखिर किस नैतिकता, सिद्धान्त व धर्म की ऊँची-ऊँची बातें करता है? वह एक प्रकार से खुद की बनाई कानून व्यवस्था व आदर्शों की ही अवहेलना नहीं करता बल्कि कुदरती व्यवस्थाओं और परमात्मा की श्रीमत की भी धज्जियाँ उड़ाता है।**

5. अध्यात्म और विज्ञान एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों में से यदि एक भी पहलू विकृत हो तो सिक्का खोटा माना जाता है और उसकी ''क्रय-शक्ति'' शून्य हो जाती है। यह एक अद्भुत आश्चर्य का विषय होना चाहिए कि आज मनुष्य, विज्ञान की अविश्वसनीय गहराई व
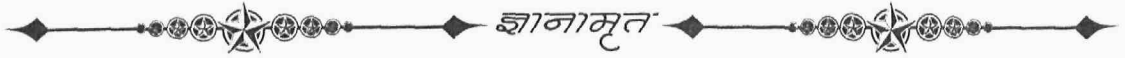
सूक्ष्मता को प्राप्त करते जा रहे हैं परन्तु दूसरे पहलू ''आध्यात्मिक विज्ञान'' को उपेक्षित छोड़ा हुआ है। फिर उनका सुख-शान्ति की अपेक्षा करना आश्चर्यजनक है। विश्व में विज्ञान की बढ़ती शक्ति के बावजूद, समाज में बढ़ती गिरावट या खोट का एक मुख्य कारण यह ''खोटा सिक्का'' ही है जिसमें आध्यात्मिक पहलू का ना होना इसे नैतिक मूल्यों के क्रय योग्य नहीं छोड़ता। आध्यात्मिक ज्ञान (विज्ञान) के प्रति मनुष्य वह जागरुकता और खोज नहीं दिखला रहे हैं जो कि भौतिकता से जुड़े विज्ञान के प्रति दिखाई जा रही है। अत: मनुष्यों के अन्तर्मन को ''आध्यात्मिक शान्ति'' प्राप्त नहीं हो पा रही है। किसी भी अविष्कार के पीछे लम्बा व खर्चीला अनुसंधान कार्य होता है परन्तु उस अविष्कार के होते ही अनुसंधान के खर्चे की ही भरपाई नहीं हो जाती बल्कि बाजार में उस नई वस्तु की बिक्री से सालों-साल मोटी आमदनी होती रहती है। फिर भी यह एक आश्चर्य का विषय है कि बुद्धिजीवी व वैज्ञानिकों के द्वारा आध्यात्मिक शान्ति के महत्त्व को जानने और स्वीकारने के बाद भी अध्यात्म को वह स्थान नहीं दिया जा रहा है जो स्थान विज्ञान को दिया जा रहा है। उन्हें यह पता नहीं कि 'जहाँ पर अध्यात्म जीवित है, वहीं पर अन्तर आत्मा जीवित है।'

6. जैसे-जैसे इस कलियुग में ''समय'' आगे बढ़ रहा है, वैसे-वैसे मनुष्य नए-नए प्रकार के व्यसनों को, यह जानते हुए भी अपनाते जा रहे हैं कि ये जानलेवा, दु:खकर्त्ता-सुखहर्त्ता, अति हानिकारक रोग हैं। शायद ही कोई ऐसा मनुष्य हो जिसे सिगरेट, पान, तम्बाकू, गुटखा, शराब व अन्य नशीले पदार्थों से होने वाली हानि का पता ना हो। इसके बाद भी उनके द्वारा इन्हें जानते-समझते अपनाना एक आश्चर्य का विषय है। इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक यह है कि इन नशीले पदार्थों का उत्पादन व बिक्री विभिन्न देशों में कार्यरत सरकारों की सहमति से होती है। सरकार एक तरफ तो इन पदार्थों का उत्पादन व बिक्री करवाती है और दूसरी तरफ स्वास्थ्य विभाग को इन नशीले पदार्थों से उत्पन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए निर्देशित करती है। यह तो ऐसे हुआ जैसे कि चोर को कहा जाए कि चोरी करो और पुलिस को कहा जाए कि चोर को पकड़ो। विस्मयकारी फिर यह है कि पकड़े गए चोर को छोड़ देने का आदेश भी ऊपर से प्राप्त होता है। व्यसनों से संबंधित रोगों को तो वह व्यसनी खुद निमंत्रण दे कर बुलाता है। वह ''आ बैल! मुझे मार'' नहीं कहता बल्कि मानो यह कहता है कि ''हे बैल! मुझे नियमपूर्वक प्रतिदिन मार।'' तुझे प्रतिदिन तेरा चारा (नशीले पदार्थ) खिलाने की जिम्मेदारी मेरी और मेरे शरीर को श्मशान घाट तक पहुंचाने की जिम्मेदारी तेरी। समाज में फैली ऐसी कुव्यवस्था क्या विस्मयकारी नहीं है!

7. सृष्टि-चक्र निरन्तर आगे बढ़ता रहता है और सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग इन चार युगों के मेल से एक कल्प या एक चक्र पूरा होता है। यहाँ तक तो विभिन्न धर्म, वर्ग या सम्प्रदायों की मान्यताएँ एक समान हैं परन्तु जब इन युगों व कल्प की आयु की बात उठती है तो विरोधी व अतर्कसंगत बातें होने लगती हैं। कोई कलियुग की आयु 40,000 साल बतला देता है और कोई अन्य सम्प्रदाय इसे लाखों वर्ष कह देता है। पृथ्वी की आयु 4600 करोड़ वर्ष का आकलन करने वाले मनुष्य, एक युग या कल्प की आयु समझ पाने में विफल हो रहे हैं, यह एक आश्चर्यजनक बात है। इस समय परमात्मा शिव द्वारा गुह्य रीति से जो ज्ञान दिया जा रहा है, उसमें प्रत्येक युग की आयु 1250 साल और कल्प की आयु 5000 साल बताई गई है। इन अवधियों के आधार पर जब सृष्टि-परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं की तर्कसंगत व्याख्या की जाती है और वैज्ञानिक प्रयोग किए जाते हैं तो वे सत्य साबित होते हैं। परमात्मा शिव, सहज राजयोग की शिक्षा से तमोप्रधान मनुष्यों को सतोप्रधान, सतयुग के लायक बना रहे हैं। यह

एक आश्चर्यजनक बात है कि करोड़ों मनुष्य जो सदियों से परमात्मा को पुकारते आ रहे हैं कि आओ, हमें पतित से पावन बनाओ, हमें दु:खों से छुड़ाओ, अब दूर खड़े होकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा परमात्मा के पतित से पावन बनाने के कार्य को होता देख रहे हैं, परन्तु फिर भी पतित से पावन बनने के लिए आगे नहीं बढ़ रहे हैं। वे अभी भी वही राग अलाप रहे हैं, परमात्मा को पुकार रहे हैं परन्तु परमात्मा शिव के दिव्य कर्त्तव्यों को होता देख कर भी संशय कर रहे हैं। आश्चर्य तब और भी बढ़ जाता है जब वह इस बात पर निश्चय कर लेते हैं या स्वीकार कर लेते हैं कि वास्तव में परमात्मा शिव आया हुआ है और ब्रह्मा के द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कार्य कर रहा है और फिर भी अपने तमोप्रधान संस्कारों को छोड़ने को तैयार नहीं होते। इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है?

यदि उपरोक्त सात आश्चर्य वाले कार्य न हों तो धरती स्वर्ग बन जाए और दु:ख, अशान्ति समाप्त हो जाए। इस प्रकार इन सात आश्चर्यों से स्पष्ट होता है कि मनुष्यों में भले ही जिज्ञासा वृत्ति, खोजी-प्रवृत्ति और असंभव को संभव करने की क्षमता हो परन्तु उनमें नैसर्गिक या स्वाभाविक आत्मिक प्रेरणा का अभाव हो गया है। इस आत्मिक प्रेरणा से प्राप्त होती है – प्रीति, रीति और नीति। अर्थात् परमात्मा से हो सच्चे प्रीतम जैसी प्रीति, कर्म में हो विवेकयुक्त, योगयुक्त रीति और आचार पद्धति में हो नैतिक मूल्यों की नीति। इससे फिर न तो आश्चर्यजनक कार्य होंगे और न ही यह होगा कि राही की राह कहीं और मंजिल कहीं। बस याद रहे कि मंजिल ऊँची है, समय कम है, रास्ता लम्बा है और विघ्न, विरोध, अवरोध पग-पग पर हैं।

▲▲

आओ मनायें चिर बसन्त

– ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

खिलेंगे फूल खुशियों के, होगा चहुँ ओर मन सुगन्ध,
बसेगी सतोप्रधानता सर्वत्र, दिखेगा न कोई अमानवीय लक्षण।
होंगे न दर्द से सर्द, न ग़म से गर्म, रहेंगे सदैव निर्द्वन्द्व,
हो के बेफिकर बादशाह, विचरेंगे निर्भय स्वच्छन्द।
होगा ही तभी धरती पे सच्चा बसन्त,
दिवस एक का नहीं, आओ मनायें चिर बसन्त।।

सेवा में, स्थिति में, सम्बन्ध-सम्पर्क में बन जाएँ निमित्त,
हो जाए वैराग्य वृत्ति संकल्प में, राग का हो बस अन्त।
बहेगी बयार शुभभावना, शुभकामना की, हर मन में चैन और अमन,
करेंगे दु:ख चिल्लाहट से मुक्त, हो के रहमदिल पावन।
होंगे शान्त-सुखी और पायेंगे निरन्तर परमानन्द,
सुन के ईश्वरीय आवाज़, होवें शिव बाप के मनपसन्द।
होगा तभी विश्व में सच्चा बसन्त,
दिवस एक का नहीं, आओ मनायें चिर बसन्त।।

होंगे प्रकृतिजीत, बनेंगे पर-उपकारी और दयावन्त,
न कोई बेघर, न कोई दर-बदर, हर घर में दीप प्रदीप्त।
निर्वाणधाम घर का पता बतावें, हो निर्माणता भरा सम्बन्ध,
दे के सकाश आत्मन्! त्राहि-त्राहि को करें ध्वस्त।
खुलेंगे गेट मुक्ति के तभी, हाय! हाय! का होगा अन्त,
वाह! वाह! होगी तभी जगत में, करेंगे शिव-दर्शन समस्त।
कहेंगे इसे ही असल में भू पे सच्चा बसन्त,
दिवस एक का नहीं, आओ मनायें चिर बसन्त।। ▢▢

'पत्र' सम्पादक के नाम

प्रश्न – लौकिक पढ़ाई में ईश्वरीय शिक्षाओं का किस प्रकार लाभ ले सकते हैं?

– ब्रह्माकुमार मनोज, दरंग (आसाम)

उत्तर –विद्यार्थी काल, जीवन का सर्वोत्तम काल है। माता-पिता तथा गुरुजनों के सरंक्षण में रह कर ज्ञान, गुण तथा चारित्रिक बल में सुदृढ़ होने का यह स्वर्णिम अवसर है। अगर इस काल में ईश्वरीय ज्ञान का संग मिल जाए तो सोने पे सुहागा हो जाता है। आज के समय में भौतिकता की चकाचौंध, सांसारिक आकर्षण, नष्ट होते जीवन मूल्य तथा काम-क्रोध-लोभ आदि विकारों के खुले परनाले, विद्यार्थियों को चरित्रहीनता तथा पथभ्रष्टता की ओर बहा कर लिए जा रहे हैं। ऐसे वातावरण में वे ही विद्यार्थी मन-बुद्धि को स्वच्छ तथा एकाग्र रख सकते हैं जो धारा के विपरीत तैरने का मनोबल रखते हों। ऐसा दृढ़ मनोबल ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास से सहज ही प्राप्त हो जाता है। ईश्वरीय ज्ञान से समझ मिलती है कि शरीर विनाशी है तथा आत्मा का वस्त्र है। इस नश्वर शरीर को सजाने में और इन्द्रियों को तुष्ट करने में समय और शक्ति जाया करना ऐसा ही है जैसे कि मुर्दे का शृंगार करना। अत: शाश्वत सत्ता आत्मा का ही गुणों से शृंगार होना चाहिए। इस प्रकार के ज्ञान से विद्यार्थी में सादगी, नम्रता, सन्तोष, दया तथा निर्भीकता का संचार होता है। वह सर्व के प्रति शुभकामना तथा भ्रातृ-भाव बनाए रखने में सफल हो जाता है।

ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग के अभ्यास से ही उसे देह से न्यारेपन का सुखद अनुभव होता है। सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा के नाम, रूप, गुण, कर्त्तव्य को जान कर वह उनसे बौद्धिक मिलन मनाता है। मन-बुद्धि द्वारा प्राप्त ईश्वरीय संग से उसका मनोबल बढ़ता जाता है तथा परमात्मा पिता के गुणों को जीवन में धारण करने का आत्म-विश्वास उसमें आ जाता है। समय, धन तथा गुणों को नष्ट करने वाली आदतों से वह स्वत: उपराम हो जाता है। ईश्वर पिता का दिव्य दुलार उसे तुच्छ, विकारी, व्यसनोन्मुख, क्षुद्र तथा हद की प्रवृत्तियों से दूर कर देता है।

उसे जीवन के एक-एक क्षण की कीमत महसूस होने लगती है। मानव जाति के प्रति, गुरुजनों के प्रति, अध्ययन के प्रति उसकी कर्त्तव्य-परायणता, जागरुकता तथा रुचि बढ़ जाती है। वह जीवन के उच्चतम लक्ष्य को पाने के लिए लौकिक पढ़ाई को तो मन लगा कर पढ़ता ही है, साथ-साथ अपने पवित्र व्यवहार, नियमितता, समयबद्धता, सदाचार, चरित्र, स्वच्छता, करुणा भाव तथा मानवीय संवेदनाओं से सर्व का दिल जीतता है और सर्व की दुआओं का पात्र भी बन जाता है। इस प्रकार, लौकिक पढ़ाई में, ईश्वरीय पढ़ाई से चार चाँद लग जाते हैं। ईश्वरीय पढ़ाई, लौकिक पढ़ाई की पूरक है। आज की जीवन पद्धति तथा शिक्षा पद्धति एक विद्यार्थी में जो कमी-कमजोरियाँ छोड़ देती हैं, ईश्वरीय पढ़ाई उनको पूर्ण कर देती है। शिक्षा के क्षेत्र की भूली हुई कड़ी, 'मूल्य शिक्षा', ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा ही विद्यार्थी के जीवन में जुड़ सकती है। इससे वह शिक्षित होने के साथ-साथ दीक्षित तथा विद्यावान होने के साथ-साथ सद्गुणवान बन जाता है।

★★★

अपसंस्कृति से उच्च संस्कृति की ओर

– ब्रह्माकुमार गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, डीग (राजस्थान)

प्रकृति-विकृति को छोड़,
चलो हम संस्कृति सीखें।
भोग-संस्कृति छोड़,
त्याग की संस्कृति सीखें।
दृष्टि, वृत्ति, कृत्ति,
सृष्टि श्रेष्ठ हों इस जीवन में।
सोलह कला संपूर्ण सतयुगी
संस्कृति सीखें।

'संस्कृति' का शाब्दिक अर्थ है–सुधार, परिष्कार, निर्माण, पवित्रीकरण, आचरणगत पवित्रता तथा सभ्यता का वह स्वरूप जो आध्यात्मिक एवं मानसिक विशिष्टता का द्योतक होता है। इसे समझने के लिए प्रकृति और विकृति दोनों शब्दों को उदाहरण सहित अपने सामने रखें तो संस्कृति को समझने में सुविधा रहेगी। **आज 'प्रकृति' स्वार्थ से परिपूर्ण है। मेरे पास चार रोटियाँ हैं तो मैं चारों रोटियाँ खाना चाहता हूँ। यह मेरी 'प्रकृति' हो गई। यहाँ तक अर्थात् इस प्रकृति तक मनुष्य सीमित रहें, तो भी गनीमत है। लेकिन मैं अपने पड़ोसी जिसके पास दो रोटियाँ हैं, उससे भी एक रोटी छीनने की कोशिश करता हूँ, तो यह 'विकृति' है। इससे हटकर जब मैं अपनी चार रोटियों में से एक रोटी अपने दो रोटी वाले पड़ोसी को देकर तीन-तीन रोटियाँ कर लेना चाहता हूँ तो यह 'संस्कृति' है। नीति यह कहती है कि हम अपनी प्रकृति को विकृति में न बदलकर संस्कृति में बदलें।** अपसंस्कृति (विकृति) से उच्च संस्कृति की ओर चलें। अपसंस्कृति से तात्पर्य हुआ विकारी संस्कृति और उच्च संस्कृति से तात्पर्य है दैवी संस्कृति। दैवी संस्कृति अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, डबल अहिंसक संस्कृति। सृष्टि-चक्र इस बात का साक्षी है कि 5000 वर्ष पहले दैवी संस्कृति थी। किसी कवि ने कहा है–

सत्य, अहिंसा, त्याग,
प्रेम की अमृतमय थी वाणी।
शेर-गाय आकर पीते थे,
एक घाट पर पानी।।

सतयुग और त्रेतायुग तक हमारे आचरण, संबंध, स्वभाव, खान-पान, शिष्टाचार आदि दैवी संस्कृति से परिपूर्ण थे। सभी संगीतकला, चित्रकला, नाट्यकला प्रिय थे। आत्मिक दृष्टि थी अर्थात् सभी देवात्माएं 'भाई-भाई' की अनुभूति करते थे। देहभान नहीं था। इच्छानुसार देह छोड़ते थे। दृष्टि के अनुसार ही वृत्ति और कृत्ति थी। इसके बाद द्वापरयुग में राजा भोज और विक्रमादित्य ने संस्कृति को संभाल कर रखने की कोशिश की अर्थात् अपसंस्कृति से उच्च संस्कृति की ओर चलते रहने का सद्प्रयास किया। साहित्यकारों ने भी संस्कृति को जीवित रखने का भरसक प्रयत्न किया। साहित्य से संस्कृति जीवित रही तो नैतिक गुण भी जीवित रहे किन्तु कलियुग में संस्कृति के टुकड़े-टुकड़े हो गए। नैतिक गुण तिरोहित हो गए। जीवन-मूल्य उठाकर ताक में रख दिए गए। जो जीवन-मूल्य हमारे आदर्श थे, उन्हें पैरों नीचे कुचल दिया गया। तभी तो साहित्यकार को दैवी संस्कृति की रक्षा के लिए मंच से व्यंग्य कहना पड़ा –

सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम से
अपना तो इतना ही नाता है।
दीवारों पर लिख देते हैं,
दीवाली पर पुत जाता है।।

इस समय सृष्टि में आसुरी संस्कृति पनप रही है, दैवी संस्कृति लोप हो गई है। सभी तमोप्रधान हो गए हैं। तभी तो चारों ओर हाहाकार मचा है। चारों ओर तनाव ही तनाव है। लोग सुख, शान्ति और आनन्द

के लिए तड़प रहे हैं। इन्हें ढूंढ़ने के लिए कोठी, कार, टेलीविजन, फ्रीज, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि की बाढ़ में बह रहे हैं। लेकिन यह प्रयास तो बुढ़िया द्वारा सूई ढूंढ़ने के मानिंद है। एक कहानी है – एक बुढ़िया सड़क पर ट्यूब लाइट के प्रकाश में सूई ढूंढ़ रही थी। किसी संवेदनशील भाई ने पूछा कि अम्मा, क्या ढूंढ़ रही हो ? बुढ़िया बोली – "बेटा, सूई खो गई है, उसी को ढूंढ़ रही हूँ।" भाई ने पूछा – "अम्मा, ला मैं भी मदद करूँ, पर यह बता किस तरफ खोई है ?" बुढ़िया ने बताया – "यहाँ नहीं खोई है, सूई तो घर में खोई है।" भाई परेशानी में आ गया और बोला – "अम्मा, सूई जहाँ खोई है, वहीं ढूंढ़ो ना।" बुढ़िया तपाक से बोली – "बेटा, वहाँ अंधेरा है।"

कहने का तात्पर्य है कि सुख, शान्ति और आनन्द जहाँ हैं, वहीं तो उन्हें खोजना है। इसके लिए हमें दैवी संस्कृति की ओर मुड़ना होगा। उच्च संस्कृति की ओर चलना होगा। अपसंस्कृति (विकृति) को छोड़ना होगा। जो भाई कहते हैं कि विकारों को छोड़ना चाहते हैं, पवित्रता और दिव्य गुणों को धारण करना चाहते हैं किन्तु मन की चंचलता तथा टेढ़ी चाल नहीं छूटती। वे भाई यह भी पूछते हैं कि कोई सहज युक्ति हो जिससे संस्कारों में परिवर्तन हो, जीवन अलौकिक बने। ऐसे आत्मीय बहनों और भाइयों के लिए ज्ञान और योग ही रामबाण औषधि है। **दिव्य ज्ञान के द्वारा मनुष्य विकारों को छोड़कर गुण धारण कर लेता है। इसके लिए जिस मनोबल की आवश्यकता है, वह मनुष्य को योग से मिलता है। इस प्रकार हर मनुष्य अपने जीवन को कमल पुष्प समान बना सकता है। काम, क्रोध, मद, लोभ आदि विकारों को छोड़कर पवित्रता, सहनशीलता, नम्रता, निर्भयता, अन्तर्मुखता, धैर्य, मधुरता और हर्षितमुखता जैसे दिव्य गुणों को धारण कर सकता है।** 'संस्कार परिवर्तन एवं व्यवहार शुद्धि' हेतु निम्नांकित चार महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की तरफ संकेत किया जा रहा है –

1. मैं प्रभु का हूँ – यदि यह स्मृति में रहे तो अपने तन, मन और धन को माया (काम, क्रोधादि विकारों) के काम में नहीं लगाएंगे। सोचेंगे, प्रभु की वस्तु को माया के कार्य में लगाना अमानत में ख्यानत है। इस युक्ति से बुरे संकल्पों को रोकने तथा पवित्र बनने में बड़ी सहायता मिलेगी। अपसंस्कृति से स्वत: ही उच्च संस्कृति की ओर अग्रसर होंगे।

2. मुझे जाना है – मन में यदि यह ध्यान हमेशा रहे कि किसी भी पल मृत्यु आ सकती है। परमधाम जाना है – इस स्मृति से मोह-ममता मिट सकती है, आचरण श्रेष्ठ बन सकता है, संस्कारों में परिवर्तन आ सकता है।

3. मुझे न्यारा और प्यारा बनना है – हमारे सामने कमल का उदाहरण है। कमल समान संसार में रहते हुए संसार से न्यारा बनकर रहना है। हमारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और स्थिति संसार से न्यारी हो। तभी तो मनुष्य भोगी से योगी बन सकता है। किसी शायर ने ठीक कहा है –

गैर मुमकिन है कि
दुनिया अपनी मस्ती छोड़ दे।
इसलिए बेहतर यही है कि
तू ही बस्ती छोड़ दे।
बहुत तरसाया है
तेरी ख्वाहिशों ने ही मुझे,
अब ख्वाहिशों के लिए
तू भी तरसना छोड़ दे।

(बस्ती छोड़ने का मतलब घर छोड़कर जाने से नहीं है अपितु 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा' से है।)

4. मुझे कर्मयोगी बनना है – अपने को कर्मशील रखने से ही जीवन जीने की कला आती है। 'मैं मूर्ख खल कामी' कहने की बजाए 'मैं कर्मयोगी हूँ', मुझे तो कर्म करते हुए परमात्मा से योग लगाना है – यह धारणा बनानी है। 'कर ते करो कर्म विधि नाना। मन राखो जहं कृपा निधाना' उक्ति
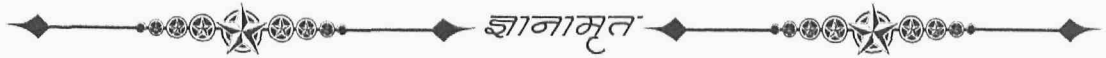
के अनुसरण से उच्च भावनाएँ, उदात्त विचार अपने आप जागृत होंगे। मन उच्च संस्कृति की ओर उन्मुख होगा। उपर्युक्त बातों से निश्चित ही संस्कार बदलेंगे। सृष्टि में संस्कृति बदलेगी। उर्ध्वगामी संस्कृति के लिए चार परहेज भी ज़रूरी हैं –

अन्न का परहेज – अन्न के लिए कहा गया है – 'जैसा खाएंगे अन्न, वैसा ही होगा मन।' अन्न से खून, खून से विचार और विचारों के अनुरूप कर्म होंगे। अत: पवित्र अन्न से श्रेष्ठ संस्कार बनेंगे, यह स्मृति में रखना है। **संग-दोष** – इससे भी बचना है। कुसंग बोरे, सत्संग तारे। सबसे बढ़कर परमात्मा का संग ही उच्च संस्कृति की ओर ले जाता है। **धन का परहेज** – धन कमाने के लिए मना नहीं है। कमाएं लेकिन गलत तरीके से नहीं,ईमानदारी से कमाएं। तनाव से कमाया तो तनाव पैदा करेगा। **मन का परहेज** – सभी के प्रति शुभ भावना-शुभ कामना ही रखें। अपकारी के प्रति भी उपकार के शुभ संकल्प ही रहें। सोचें –

सर्वे भवन्तु सुखिन:
सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित् दु:ख भाग्भवेत।।

मन स्वच्छ रखें, निश्चिंत रहें। विजय श्री जीवन में हाथ लगेगी। अप-संस्कृति से उच्च संस्कृति की ओर चलने के लिए सहज राजयोग से सुपरिचित होकर धारणा में लाने की ज़रूरत है। आइए, पुरुषोत्तम संगमयुग में पाँच विकारों का दान करें। ज्ञान-गंगा में नित्य स्नान करें और सहज राजयोग द्वारा देह से न्यारे होकर सच्ची आध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ करें। मन का मैल धुलेगा तो पिछले विकर्म दग्ध होंगे और संस्कार सतोप्रधान बनेंगे। संगमयुग ललकार कर कह रहा है –

संगमयुग कह रहा–आ रही,
सतयुग की सतरंगी भोर।
अप-संस्कृति को छोड़-छाड़कर,
चलो उच्च संस्कृति की ओर।।

भगवान का फ़रमान

– ब्रह्माकुमार भूपेन्द्र, आजमगढ़, बनारस

काम–क्रोध ... की किचड़ दे दो, यह तेरे किस काम की,
ले लो, ले लो स्वर्ग का वर्सा, यही विरासत राम की।
आदि–मध्य–अन्त दु:ख देती है यह, इसके ढंग निराले हैं,
ऊपर उजली, भीतर काली, इसकी अद्‌भुत चालें हैं,
रौंदा जिसने सबका जीवन, सबकी जान हराम की।
काम-क्रोध ... की ....

आज तपाती माया (पाँच विकार) सबको देहाभिमान की आग में,
करती है गुमराह सभी को, मद, लोभ और राग में,
देखो हम आये हैं लेकर, शीतलता सुखधाम की।
काम-क्रोध ... की ....

आलस, निन्दा, द्वेष, बुराई, इसके धोते–पोते,
ये हर दिल की कोमल धरणी में, काँटे ही तो बोते,
पावन बन चल स्वर्णिम दुनिया में, रखना पत फ़रमान की।
काम-क्रोध ... की ....

अब तक बहुत चढ़ाये तूने अक और भाँग–धतूरे,
अब खुद अर्पण हो जा शिव पर, दु:ख के दिन हुए पूरे,
मैं रखवाला हूँ तेरा, क्यों फिकर करे परिणाम की ?
काम-क्रोध ... की ....

☆☆

जनसंख्या विस्फोट – भयावह स्थिति

– ब्रह्माकुमार मोहन, श्रीगंगानगर

जीवित जगत में मनुष्य सभी का सिरमौर है, सर्वश्रेष्ठ है परन्तु कैसी विडम्बना है कि आज उसकी तीव्रगति से बढ़ती हुई संख्या ने प्रसन्नता पैदा करने के बजाए अनेक समस्याओं को जन्म दिया है और उन समस्याओं के भयावह परिणाम भी हमारे सामने हैं। मोटे तौर पर इन परिणामों को निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है – 1. **आर्थिक परिणाम** – बेरोजगारी, महँगाई, मिलावट, कालाबाजारी, रिश्वत, भूखमरी, अकाल-मृत्यु, कुपोषण, नकली पदार्थ, संग्रह प्रवृत्ति, बीमारियों में वृद्धि इत्यादि। 2. **सामाजिक परिणाम** – नशा प्रवृत्ति, तस्करी, आतंकवाद, चोरी, डकैती, अपहरण, लूटपाट, गरीबी, बेतरतीब बढ़ती हुई कालोनियाँ, अपराधों में वृद्धि, बाल मजदूरी, बंधुवा मजदूरी, अन्न, जल, भवन, बिजली की कमी इत्यादि। 3. **पारिवारिक परिणाम** – बिखरे परिवार, पारिवारिक असुरक्षा, वृद्धों की दयनीय अवस्था, पारिवारिक तनाव, स्वार्थ प्रधानता, संबंधों में स्नेह का अभाव, दहेज-प्रथा, दुल्हन दहन, नारी उत्पीड़न, भ्रूण हत्या, आत्महत्या इत्यादि। 4. **प्राकृतिक परिणाम** – वनों का विनाश, वर्षा असंतुलन, कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास, गिरता जलस्तर, दूषित नदियाँ, बढ़ती गन्दगी, कृषि योग्य भूमि का कम पड़ना, बढ़ता औद्योगिकरण, औद्योगिक गैसों से दूषित वायुमण्डल, ओज़ोन परत की हानि, अत्यधिक गर्मी, ग्लेशियरों का पिघलना शुरू, सागर का जलस्तर बढ़ना शुरू, अनेक देशों के डूबने का खतरा इत्यादि।

उपरोक्त कारणों के लिए दोषी कौन ? हम सब मानव दोषी हैं। धरती माता और बोझ सहन करने की स्थिति में नहीं है, यह ध्यान रहे। दवा वृक्ष के पत्तों या डालियों पर नहीं छिड़की जाती, जड़ में दी जाती है तभी समूचे वृक्ष की रक्षा हो सकती है। इसी प्रकार, अनेक धर्मों, मजहबों रूपी डालियों एवं उनसे संबन्धित मनुष्यात्माओं रूपी पत्तों की रक्षा करनी है और उन्हें उपरोक्त समस्याओं अथवा बीमारियों से बचाना है तो केवल नारे, निरोध या परिवार नियोजन जैसे अल्पकालिक समाधान की नहीं बल्कि **भारतीय प्राचीन पद्धति 'ब्रह्मचर्य व्रत' अपनाने की आवश्यकता है। स्वयं पर कड़े अनुशासन अथवा संयम की आवश्यकता है। सोच को बदलने की आवश्यकता है। अज्ञानतावश कुछ लोग इस मानसिकता के शिकार हैं कि उनके समुदाय की जनसंख्या बढ़ने से ही उनके अस्तित्व की सुरक्षा संभव है। वे इस भयावह स्थिति की ओर से कबूतर के समान आँखें बंद कर जनसंख्या बढ़ाने में जुटे हैं।** वे यह भूल रहे हैं कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' कही गई है। अति के बाद अन्त होना ही है। यदि जनसंख्या वृद्धि की यही गति बनी रही तो वह समय दूर नहीं जब हम न चैन से रह सकेंगे, न ही खा सकेंगे, न ही जी सकेंगे। चारों ओर गृहयुद्ध, लूटपाट का बाज़ार गर्म होगा। क्या हम यही चाहते हैं ?

सर्व शास्त्रमयी शिरोमणि श्रीमद्भगवदगीता के भगवान ने आदेश, निर्देश व उपदेश दिया कि 'काम' महाशत्रु है, महावैरी है, इसे मारो। क्योंकि काम से क्रोध उत्पन्न होता है और क्रोध से मनुष्य की बुद्धि पर अज्ञानता का पर्दा पड़ जाता है। जैसे जेर से गर्भ ढका रहता है और मैल से दर्पण ढक जाता है, वैसे ही काम विकार उत्पन्न होने से विवेक पर शून्यता का आवरण छा जाता है और मनुष्य भला-बुरा समझने योग्य नहीं रहता है।

वर्तमान समय मनुष्य की करतूतों का साक्षात्कार कराते समाचार-पत्र चीख-चीख कर कह

रहे हैं कि मनुष्य सामाजिक नहीं निर्दयी प्राणी बन गया है, जो अपहरण, बलात्कार, मिलावट, हत्या, नशाखोरी एवं भोगवादी प्रवृत्ति का शिकार हो तेजी से पतन की ओर बढ़ रहा है। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपनी ही नस्ल का विनाश करने पर तुला हुआ है। मनुष्य ही वह प्राणी है जो भरा पेट होने पर भी लड़ने-मरने पर उतारू है। पशुओं के भी कुछ नियम-संयम हैं संबंध करने में। परन्तु हाय रे मनुष्य! तेरी तो बात ही कुछ और है। न दिन, न रात, न वार, न त्योहार, तू तो हर समय 'काम' की ज्वाला में जल, मर रहा है। इसलिए आज बाप-बेटी, भाई-बहन के पवित्र रिश्ते भी नापाक हो रहे हैं। छोटी-छोटी मासूम बालिकाओं से बलात्कार व उनकी हत्या आम बात हो गई है। आज हम पशु का भरोसा कर सकते हैं मगर इन्सान का नहीं। इसीलिए किसी ने सच ही कहा है – 'आज के इन्सान को ये क्या हो गया है?'

ऐसी भयावह स्थिति में ही ईश्वर, अल्लाह, खुदा, गॉड अथवा वाहेगुरु का यही आदेश है कि 'काम विकार' को जीतो। काल-चक्र (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग) अपने अन्तिम चरण की ओर तेजी से अग्रसर है। अब वापस परमधाम लौटने का समय है। समस्त आत्माओं की वानप्रस्थ अवस्था है। वानप्रस्थ अवस्था में 'भोग' नहीं 'योग' मार्ग पर चलना होता है। एक मधुमेह (शूगर) का मरीज जब डॉक्टर के पास जाता है तो डॉक्टर उसे क्या परहेज बताता है? शूगर अर्थात् चीनी बन्द करने को कहता है। केवल चीनी, गुड़ ही नहीं, सभी फल जिनमें मिठास हो, बन्द कर देता है। तब मरीज क्या करता है? कभी उच्च रक्तचाप का मरीज डॉक्टर के पास पहुँचता है तो डॉक्टर नमक बन्द कर देता है। जिस नमक या चीनी का आज तक प्रयोग किया व जिसका स्वाद जुबान पर रच-बस गया, ऐसे प्रिय पदार्थ को बन्द करने को कहा जाए तो हम क्या करेंगे? हमारे पास दो विकल्प हैं।

स्वाद या स्वास्थ्य (जीवन)– **हम किसको चुनेंगे? स्वास्थ्य को ही ना। उसी रीति आज काम विकार हमारी नस-नस में समा चुका है। हमें आँखों द्वारा देखने के वास्ते नग्न, अर्द्धनग्न, उत्तेजक दृश्य पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, सिनेमा एवं टी.वी. आदि में चाहिएँ। हमें कानों द्वारा सुनने के लिए अश्लील, द्विभाषी शब्द गीत चाहिएँ। घर की दिवारों पर ऐसे ही उत्तेजक दृश्य चाहिएँ। हर सुन्दर नारी के प्रति वासनात्मक दृष्टि हो चुकी है। जैसे कि काम विकार मनुष्य में रक्त कैंसर की तरह रोम-रोम तक फैल चुका है। मनुष्य की दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और कृति में केवल काम समाया है। मनुष्य हर समय काम विकार से** पीड़ित है। परन्तु याद रखें– जहाँ काम है वहाँ राम नहीं।

भक्तों के भगवान, शिक्षकों के शिक्षक, गुरुओं के गुरु, सर्जनों के सर्जन स्वयं परमपिता परमात्मा शिव (जिन्हें कामारि अर्थात् काम का शत्रु कहा गया है) आदेश देते हैं– पवित्र बनो, योगी बनो। चाहे सनातन धर्म, चाहे आर्यसमाज, चाहे बौद्ध धर्म, चाहे जैन धर्म, चाहे ईसाई धर्म सभी ने ब्रह्मचर्य व्रत की महिमा स्वीकार की है। सभी धर्म पिताओं ने इस व्रत को धारण किया, भले ही आज उनके अनुयायी न धारण करते हों। एक जिम्मेवार नागरिक होने के नाते क्या आप इस व्रत को धारण करना चाहेंगे? **सभी धर्मपिताओं के भी पिता परमपिता परमात्मा शिव हम सभी को ऐसे जिम्मेवार नागरिक बनाना चाहते हैं जो समाज की नकारात्मक धारा के विपरीत तैर सकें। इस समय जो घटित हो रहा है, उसमें निर्लिप्त रहकर पवित्रता और निष्पाप जीवन का उदाहरण बन सकें।** इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की है जो सदैव आपकी सेवा में तत्पर है। किसी भी सेवाकेन्द्र पर पधारकर आप ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

सलाखों में मिली लाखों ईश्वरीय दुआएँ

कोई भी व्यक्ति सलाखों में बन्द नहीं रहना चाहता। स्वतन्त्रता और मनचाही उड़ान सबको प्यारी है। परन्तु सच्ची स्वतन्त्रता उसी को मिलती है जिसका स्व पर तन्त्र अर्थात् राज्य हो। जो स्वयं पर राज्य नहीं कर सकता और इन्द्रियों की क्रूर अधीनता में रहता है उसे स्वप्न में भी खुशी और शांति नहीं मिल सकती। यही कारण है कि आज संसार के अधिकतर लोग, सुख-साधनों के बीच रहते भी मन से अतृप्त और उदास हैं क्योंकि दास हैं स्वभाव के, आदतों के, इच्छाओं के, तृष्णा के, इन्द्रियों के और मन के। इस दृष्टि से देखा जाए तो सारा संसार एक वृहद् कारागृह है जिसमें मानवात्माएँ काम, क्रोध, लोभ, मोह की अदृश्य रस्सियों में जकड़ी पड़ी हैं। ये बन्धन इतने सूक्ष्म हैं कि स्वयं को दिखाई नहीं देते। आत्मा देहाभिमान वश होकर इन बन्धनों में बंधती है परन्तु बन्धनों के लिए दोषी दूसरों को मानती है। उसकी उंगली सदा दूसरों पर उठती है कि अमुक व्यक्ति मेरे दुःख का कारण है। उस दुःख के कारण को मिटाने के लिए कभी-कभी उसका मन इतना अधिक उत्तेजित हो जाता है कि वह कर्मेन्द्रियों द्वारा जघन्य अपराध कर बैठती है। हत्या, मारपीट जैसे राक्षसी कृत्य कर बैठती है और परिणामस्वरूप अदृश्य सलाखों के साथ-साथ दृश्य सलाखों के बन्धन में भी बंध जाती है। यह आवश्यक नहीं है कि जेलों में बंद सभी दोषी ही हैं। कई बार निर्दोष व्यक्ति भी किसी पूर्व कर्म के हिसाब-किताब अनुसार बंदी बनने के लिए मजबूर हो जाते हैं। परन्तु जिस प्रकार सूर्य की किरणें संसार के हर कोने को प्रकाशित करती हैं, उसी प्रकार ज्ञान-सूर्य शिव बाबा की ज्ञान-किरण, प्रेम-किरण, शक्ति-किरण, पवित्रता-किरण, आनन्द-किरण समस्त संसार के साथ-साथ सलाखों में बंद कैदियों तक पहुँचने में भी कोई परहेज़ नहीं करती हैं। आइए चलें, मध्यप्रदेश के रीवा जिले की केन्द्रीय जेल में जहाँ सलाखों में बंद कैदी भाई लाखों ईश्वरीय दुआएँ राजयोग के अभ्यास से नित्य ग्रहण कर रहे हैं–

जेल परिसर में घुसते ही चारों ओर अनुशासन और शांति की सहज स्थिति का अहसास होता है। सफेद परिधान पहने, सिर पर टोपी लगाए कैदी भाई विभिन्न आन्तरिक व्यवस्थाओं में अधिकारियों को

रीवा- केन्द्रीय जेल में ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन । साथ में हैं ब्रह्माकुमारी निर्मला बहन तथा जेलर भ्राता मृत्युंजय सिंह बघेल ।

अनुशासनबद्ध होकर सहयोग देते दिखाई देते हैं। चारों ओर हरियाली और रंग-बिरंगे खुशबूदार फूल जब हिल-हिल कर स्वागत करते हैं तो किसी सुन्दर उद्यान में आने का भ्रम पैदा करते हैं। रास्तों की स्वच्छता भी मन को प्रभावित करती है। जेलर भ्राता मृत्युञ्जय सिंह बघेल अपनी श्रेष्ठ धारणा को जाहिर करते हुए कहते हैं कि मानवता के नाते हम किसी को जितना अधिक से अधिक सुख पहुँचा सकें, उसके लिए कृत संकल्प हैं। हमारा लक्ष्य है कि हम इन कैदियों को अच्छे से अच्छा प्रशासन दें। जेल के एक अन्य हिस्से में पिछले 7 वर्षों से राजयोग की कक्षाएं चल रही हैं। वर्तमान समय लगभग 25 कैदी भाई इसमें नियमित रूप से उपस्थिति देते हैं। पिछले 7 वर्षों में 135 कैदी भाई योगाभ्यास के द्वारा जीवन सुधार कर और आत्मिक शक्ति प्राप्त कर नया सात्विक जीवन प्रारम्भ कर चुके हैं। राजयोगी बने इन कैदियों की कहानी इन्हीं की जुबानी सुनिए –

मुझ पर परमपिता परमात्मा की ऐसी असीम कृपा हुई जो मुझे इस जेल में रहते, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से सच्चा गीता ज्ञान मिला जिसमें मैं लगभग 6 वर्ष से चल रहा हूँ। जेल को दुनिया बहुत घृणा की दृष्टि से देखती है पर मेरे लिए यही जेल, जेल नहीं, धर्मशाला है, सुधारगृह है, तीर्थ स्थान है। मुझ निर्दोष व्यक्ति को आज 11 वर्ष जेल में हो गए हैं लेकिन परमात्म प्यार के आगे मुझे कोई गम नहीं। रामायण में लिखा है कि कपि की ममता पूँछ पर। इसी प्रकार बंदी की ममता होती है छूटने पर। लेकिन निर्दोष होते हुए भी मुझे अपने छूटने के विषय में कोई चिन्ता नहीं है क्योंकि जिस दिन छूटना है, वह तिथि निश्चित है। भगवान ने सृष्टि-ड्रामा का राज़ बता दिया है। कहा गया है कि समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता। मैं अपना बहुत ऊँचा भाग्य समझता हूँ जो मुझे जेल में भगवान ने सेवा दी है, मैं भगवान का मददगार बना हूँ। ऐसा कौन होगा जो भगवान की दी हुई सेवा को इंकार कर दे! इसलिए चाहे भगवान जेल में रखे, चाहे रेल में, मैं तो उसी का हूँ और उसी के लिए हूँ। जिस जीवन को आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई, वह भगवान को दे दिया तो 'आजीवन सज़ा' के बदले 'आजीवन मज़ा' हो गया। 'आजीवन मज़ा' तो क्या '21 जन्मों के लिए मज़ा' हो गया। इसलिए मैं तो परमात्म प्यार में मस्त रहता हूँ। नित्य अमृतवेले 3 बजे योग लगाता हूँ और सुबह-शाम प्यारे शिव बाबा की मुरली, जेल में चलने वाली ज्ञान-योग की क्लास में 25-30 भाइयों को सुनाता हूँ। किसी-न-किसी को

प्यारे शिव बाबा का परिचय भी देता रहता हूँ। हर रविवार रीवा आश्रम से बहनें भी आती हैं तो ऐसे लगता है जैसे कि पूरे सप्ताह के लिए शक्ति भर कर जाती हैं। यहाँ रहते मैंने यह अनुभव किया है कि कोई भी व्यक्ति अपनी शक्ति से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार...आदि बुराइयों से छूट नहीं सकता लेकिन स्वयं को और परमात्मा को यथार्थ रीति जानकर परमात्मा से योग लगाने से ये कड़े विकार सहज ही छूट जाते हैं। मैंने परमात्म प्यार में सर्व बुराइयाँ परमात्मा को दे दी हैं। न कल की चिंता है, न काल का डर है। प्यारे शिव बाबा ने मुझमें दैवी गुण भर दिए हैं। बाबा मुझे हीरे-तुल्य बना रहे हैं। यहाँ जेल में अधिकारियों का भी प्यार और सहयोग मिलता है। यहाँ के अधिकारीगण ज्ञान में चलने वाले समस्त भाइयों के लिए बिना प्याज-लहसुन की दाल-सब्जी अलग से बनवाते हैं। सतगुरुवार के प्रसाद के लिए सामग्री भी देते हैं तथा ईश्वरीय सेवा के लिए समय भी देते हैं।

कुछ ग्रन्थों में, कामधेनु, कल्पवृक्ष और पारस पत्थर की बहुत ऊँची व्याख्या लिखी है और कहा गया है कि ये चीज़ें आज भी हैं तथा इनमें से किसी को एक भी मिल जाए तो वह मालामाल हो जाए। अब मुझे ये तीनों चीज़ें मिल गई हैं और मैं मालामाल हो गया हूँ। प्यारे भाइयो! परमात्मा आया है, हम बच्चों की झोली भरने और पाप काटने। सिर्फ भगवान दिल की सच्चाई-सफाई चाहता है। मेरी बुद्धि और मुख में इतनी शक्ति नहीं है जो इस संस्था का वर्णन करूँ। वास्तविकता तो यह है कि यह संस्था नहीं, एक अलौकिक ईश्वरीय प्रेम है लेकिन अपने सतोप्रधान संस्कारों के कारण किसी भाई को यह मार्ग अमृत और हीरे-सा दिखाई देता है और तमोप्रधान संस्कारों के कारण कइयों को विष और कंकड़ के समान। प्यारे बाबा ने पहले ही बता दिया है कि बच्चे, यह ज्ञान-प्रकाश सबको दिखाओ, जो दैवी कुल का होगा, वह बाबा का बन जायेगा।

– ब्रह्माकुमार काशीराम, रीवा जेल

यह सत्य कहा गया है कि मानव का सबसे बड़ा दुश्मन उसका स्वभाव होता है। बाल्यकाल में माता-पिता का भरपूर स्नेह मिलते हुए भी मैं जीवन में वीरानगी और नीरसता

महसूस करने लगा था और मुझे क्रोध बहुत आता था। किसी की बात सहन नहीं होती थी। लड़ाई-झगड़े में भाग लेना मेरा पहला काम था। बदले की भावना रखना मेरी आदत बन गई थी। इसी के चलते मुझसे एक कत्ल हो गया और मैं धारा 302 के तहत जिला जेल टीकमगढ़ में बंद हो गया। जेल में सुधरने के बजाए बिगड़ अधिक गया क्योंकि यहाँ नये-नये दोस्त और अपराध के नये-नये तरीके जानने को मिले। चरित्र अच्छा न हो तो भजन-पूजन भी मानव को शान्ति नहीं दे सकता। मैं भी भक्ति करते भी सदा परेशान रहता था। लेकिन केन्द्रीय जेल रीवा में स्थानान्तरण होने पर मुझे निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव पिता का तथा स्वयं का सच्चा ज्ञान मिला और धीरे-धीरे मुझे अलौकिक और दिव्य अनुभव होने लगे। अब तो जब भी जेल में आध्यात्मिक कार्यक्रम होते हैं तो सभी बंदी एवं अधिकारियों को बहुत खुशी होती है। मुझे तो बहुत ही आनन्द आता है। मुझे इस ईश्वरीय ज्ञान और परिवार से बहुत प्यार है। जबसे मुझे ईश्वरीय गोद मिली है, सभी व्यसन और विकार अपने-आप छूट गए हैं।

– ब्रह्माकुमार थान सिंह

बढ़ते खर्चे, व्यसन, असहिष्णुता, स्वार्थ और नफरत आदि ऐसे अवगुण हैं जो मानव को अन्दर से खोखला कर देते हैं, ठीक-गलत की समझ खो देते हैं। मोह में अन्धा होकर भी मानव जघन्य अपराध कर बैठता है। मैं भी परिवार में रहते, परिवार के सदस्यों की नफरत, अन्याय और अत्याचार का शिकार हुआ। मेरे कई बच्चों की मृत्यु इस दौरान हुई तो मैं पागल-सा हो गया। बच्चों को अकाल-मृत्यु से बचाने के लिए मैंने एक झाड़-फूंक वाले को 500 रुपये और एक बकरी भेंट स्वरूप दी। पर इतना करने पर भी मुझे कोई लाभ नहीं दिखाई दिया तो मैंने उस झाड़-फूंक वाले भाई को मारने का निश्चय कर उस पर घातक प्रहार किए। पुलिस ने मुझे पकड़ लिया, आजीवन कारावास की सजा हो गई। जेल में मैं मानसिक रूप से बीमार हो गया इस चिन्ता में कि मैं कभी मुक्त नहीं हो सकूँगा। कुछ समय बाद जेल परिसर में मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिला। मुझे निश्चय हो गया कि हम बेहद बाप के बच्चे हैं। हमें पढ़ाने वाला भगवान है। अब मेरा जीवन बदल गया है। मुझे लग रहा है कि जेल में आना अच्छा हुआ। यहाँ
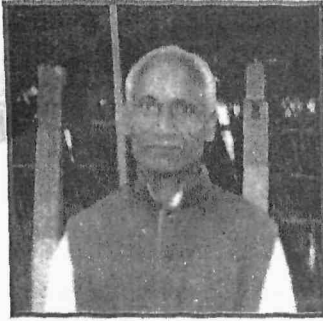
आकर ज्ञान-प्रकाश मिल गया है, नहीं तो जीवन अज्ञानांधकार में पड़ा था।

– ब्रह्माकुमार रामदुलारे

पारिवारिक मतभेद जब कलह, विवाद, झगड़े और ईर्ष्या का विकराल रूप धारण कर लेते हैं तो भाई ही भाई का दुश्मन बन कर उसे कचहरी तक पहुँचा देता है। मैं भी भाई के साथ हुए विवाद के परिणामस्वरूप सलाखों के पीछे आ पहुँचा। पहले तो जेल जाने से बेहतर लगता था मर जाना परन्तु कर्मों ने जेल भेज ही दिया तो आना पड़ा। यहाँ आकर मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिल गया। मेरा जीवन ही बदल गया। मुझे बहुत ही अच्छा लगा और खुशी से भरपूर हो गया। पहले मैं अपने को शरीर समझता था लेकिन अब सत्य मिला है कि मैं उस निराकार सत्य पिता परमात्मा का बच्चा हूँ। हम सब आत्माएँ आपस में भाई-भाई हैं। मेरा सत्य स्वरूप निराकार ज्योतिर्बिन्दु है। मैं अविनाशी बाप की अविनाशी संतान हूँ। मेरा घर परमधाम है। इस दुनिया में शरीर का आधार लेकर पार्ट बजाने आया हूँ। मैं हर कल्प 84 भिन्न-भिन्न जन्म लेकर पार्ट बजाता हूँ। अब मेरे अन्तिम जन्म का भी अन्तिम समय है। इसी 84वें जन्म में आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है। अब मुझे पूरा निश्चय और विश्वास है कि चाहे माया के कितने भी तूफान आएं, चाहे प्राकृतिक आपदाएँ आए, चाहे लोगों की भिन्न-भिन्न बातें सुननी पड़ें, चाहे लौकिक एवं अलौकिक

परिवार में परिस्थितियाँ आएं लेकिन एक बाप दूसरा न कोई, इसी नशे और खुशी में रहना है।

– ब्रह्माकुमार कृष्णपाल

बंधनमुक्त (पृष्ठ 01 का शेष).........

परमात्मा से प्रार्थना करते हैं – '' हे प्रभु, विषय-विकार मिटाओ और पापों-सन्तापों को हरण करो।''

एक समय था, जिसे 'सतयुग' कहते हैं। उस युग की हरेक आत्मा इन सभी बुरे संस्कारों से मुक्त थी। श्रीकृष्ण तब सुख-चैन की बंशी बजाया करते थे। तब पृथ्वी पर देवत्व ही का राज्य था, आसुरी वृत्तियाँ नाम-मात्र भी न थी। परन्तु अब तो विकारों की जंज़ीरों में सभी जकड़े हुए हैं। अत: किसी ने सच कहा है – ''मनुष्य ने जब जन्म लिया तो स्वतन्त्र था परन्तु अब वह अपने को कई प्रकार की बेड़ियों में जकड़ा हुआ पाता है (Man was born free but he finds himself everywhere in chains)। वास्तव में इस उक्ति का पूर्वार्द्ध सतयुग में नर-नारी के जन्म पर और उत्तरार्द्ध कलियुगी सृष्टि की दशा पर अर्थात् वर्तमान स्थिति पर चरितार्थ होता है। सचमुच, कलियुग के अन्त में मनुष्य की ऐसी दशा हो जाती है कि आखिर सदा मुक्त परमात्मा को साधुओं का भी परित्राण करने, भक्त जनों को भँवर से निकालने और पतितों को पावन करने के लिए आना पड़ता है। ऐसे समय को कलियुग का अन्त कहते हैं। अब परमपिता परमात्मा मनुष्य को ऐसा योग सिखा रहे हैं जिससे वह इन सभी जंज़ीरों या पिंजरों से मुक्त हो सकता है। ✦

प्रसन्नता की चाबी – सकारात्मक सोच

– ब्रह्माकुमार डॉ. आर.पी. गुप्ता, पानीपत (हरियाणा)

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति खुश रहना चाहता है, चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, नर हो या नारी, गृहस्थी हो या संन्यासी, अमीर हो या गरीब। तभी तो गायन है–खुशी जैसी खुराक नहीं। यह अलग बात है कि तन के रोग, मन की दुर्बलताएँ, कर्मों के बन्धन और कदम-कदम पर आने वाली परिस्थितियाँ मानव को हताश और निराश करती रहती हैं। उपरोक्त बातों को आने से तो रोका नहीं जा सकता परन्तु इनके प्रति दृष्टिकोण को अवश्य बदला जा सकता है। संसार एक सागर की तरह है, इसमें लहरें तो अवश्य आएंगी परन्तु जैसे एक कुशल तैराक लहरों के थपेड़ों का सामना बड़े साहस से करता है और सागर को पार कर लेता है, ठीक उसी प्रकार जीवन में भी उतार-चढ़ाव, नफा-नुकसान, मान-अपमान, खुशी-गमी जैसी बातें तो आएंगी लेकिन इनका सामना करने के लिए सरलता, मधुरता, आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और मनोबल की धारणा के साथ-साथ सोच भी सकारात्मक हो तो सोने में सुहागा हो जाता है।

एक बार 'शिक्षा में सुधार' विषय पर प्राचार्यों का सेमीनार रखा गया और उनसे एक ही सवाल पूछा गया कि अगर आपके हाथ में एक जादू की छड़ी दे दी जाए और आपको विद्यार्थियों की एक चीज़ बदलनी हो तो आप क्या बदलेंगे ? लगभग सभी एक ही आवाज में बोले कि विद्यार्थियों का नजरिया। उनका मानना था कि यदि विद्यार्थियों का नजरिया सकारात्मक हो जाए तो उनके जीवन में उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, अनैतिकता, चारित्रिक पतन, माता-पिता तथा गुरुजनों के प्रति श्रद्धाहीनता और राष्ट्रीय भावना की कमी समाप्त होकर नैतिकता, सत्यनिष्ठा, सदाचार तथा आध्यात्मिकता जैसे दैवी गुणों का समावेश हो सकता है, जो पूरे विश्व के लिए हितकारी सिद्ध होगा। हम चाहे किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हों, कामयाबी की बुनियाद एक ही है और वह है सकारात्मक नजरिया। इसके लिए वर्तमान में जीना सीखें और काम को तुरन्त करने की आदत डालें। नजरिये पर किसी ने ठीक ही कहा है–

मैंने सलाखों के पीछे से
झांक कर देखा,
नीचे कीचड़ और ऊपर चाँद देखा।
किसी ने कीचड़ में कमल देखा,
और किसी ने चाँद में भी
दाग देखा।।

सकारात्मक नजरिया जिन्दगी को बेहतर बनाता है, मिल-जुलकर काम करने की प्रेरणा देता है, मुश्किलें सुलझाता है, भाईचारे का माहौल बनाता है, वफादार बनाता है, तनाव कम करता है, अच्छी शख्सियत का निर्माण करता है। घटिया नजरिया आपस में कड़वाहट पैदा करता है, जिन्दगी को निरुद्देश्य बना देता है, खराब सेहत का शिकार बनाता है, खुद और दूसरों के लिए तनाव का कारण बनता है और ऐसा व्यक्ति न केवल अपने परिवार के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए बोझ बन जाता है। सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने के लिए हमें निम्न बातों को अपने जीवन में अवश्य धारण करना है–

1. अपनी सोच बदलें और अच्छाई ढूंढने का प्रयत्न करें – हर इन्सान में कोई न कोई अच्छाई जरूर होती है। व्यक्ति की कमियों की तरफ ध्यान देने की बजाए अच्छाई ही देखनी चाहिए और उसका ही वर्णन करना चाहिए। संत कबीर ने ठीक ही कहा है –

बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा ना मिलिया कोई,
दिल खोजा जो आपना,
मुझसे बुरा ना कोई।

अगर बुराइयाँ देखनी हैं तो अपने में देखो और उनको निकालते जाओ और अच्छाइयाँ देखनी हैं तो दूसरों में देखो और जीवन में धारण करते जाओ। इससे एक दिन अच्छाइयों का भण्डार जमा हो जाएगा और बुराइयों का नाम-निशान भी नहीं रहेगा।

2. हर कार्य को तुरन्त करने की आदत डालें – इन्सान को काम करने से इतनी थकावट नहीं होती जितनी कि बहानेबाजी और टालमटोल करने से होती है। जो काम आज कर सकते हैं उसे कभी कल पर न छोड़ें। हर कार्य कल पर टालते गए तो काम कभी भी पूरे नहीं होंगे और धीरे-धीरे खुशी गायब होती जाएगी। हम क्यों भूल जाते हैं कि क्या कल कोई भी परिस्थिति नहीं आएगी ? और जबकि हम आज का काम आज ही नहीं कर सकते तो कल दो दिन का काम कैसे करेंगे ? आज का काम कल पर छोड़ कर, कल को और बोझिल मत कीजिए। ब्रह्मा बाबा अक्सर कहा करते थे– "कल को किसने देखा है, जो करना है, आज ही करना है।" उनका यह भी मानना था कि देर करना दर्दनाक स्थिति को लाना है (Delay is Dangerous)।

3. बुरे असर से दूर रहें – घटिया और नकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों को कभी भी अपने ऊपर हावी न होने दें। याद रखें एक इन्सान का चरित्र सिर्फ इस बात से नहीं जाना जाता कि वह कैसी संगत में रहता है बल्कि इस बात से भी जाना जाता है कि वह कैसी संगत से दूर रहता है। कहते भी हैं –संग तारे, कुसंग डुबोये। अच्छा संग भवसागर से पार करा देता है और बुरा संग बीच सागर में ही डूबो देता है। आज व्यक्ति भाषण की बजाए व्यवहारिक जीवन से अधिक प्रभावित होता है।

4. अच्छे ढंग से दिन की शुरूआत करें – दिन की शुरूआत कोई अच्छा विचार पढ़ने या सुनने से करें। सुबह उठते ही सबसे पहले अपनी दृष्टि परमपिता परमात्मा पर डालें जो हमारा परम शिक्षक और परम सतगुरु है। रात को सोने से पहले परमपिता परमात्मा का धन्यवाद करें और दिन भर में कोई भूल हो गई हो तो उससे माफी माँगें। यदि हम अपना सारा बोझ, सारी चिन्ताएँ उसी परमसत्ता को सौंप कर सोएँगे तो निश्चित ही हमें नींद अच्छी आएगी और सुबह जब हम उठेंगे तो अपने आपको तरोताजा महसूस करेंगे।

5. राजयोग का अभ्यास करें – राजयोग एक ऐसा रामबाण है जिसमें सभी अच्छाइयाँ छिपी हुई हैं। यदि हम इसका अभ्यास करते हैं तो यकीन मानिए कि हमारा हर कार्य सही ढंग से और सही समय पर सम्पन्न होगा। हम हर व्यक्ति में कमियों की बजाए अच्छाइयाँ ही देखेंगे। इससे न केवल हमारी सोच ही बदल जाएगी बल्कि हमारा जीवन भी एक खिले हुए फूल के समान मुस्कराता रहेगा। ✤

बुरा मत सुनो

स्कूल में कोई बच्चा ग़लती करता है तो उसके कान पकड़ते हैं अथवा उसको मुर्गा बनाते हैं। उसमें भी उस बच्चे को अपने ही कानों को पकड़ना पड़ता है। व्यक्ति अपनी की हुई ग़लती पर माफ़ी माँगने के लिए अपने कान खुद पकड़ता है। सारा शरीर पड़ा है, फिर भी कानों को क्यों पकड़वाते हैं? क्योंकि कोई भी व्यक्ति बुरा सोचता है, बुरा बोलता है और बुरा करता है लेकिन उससे पहले उसने बुरा सुना होता है। बुरा सुनना ही सब बुराइयों की बुनियाद है। अगर वह बुरा सुनेगा नहीं तो उसकी बुद्धि बुरे की तरफ़ जायेगी ही नहीं। तो पहले दो कानों रूपी दुकान को बन्द करना है। ✹

आवश्यकता है समाज के लिए कुछ करने की

–भारत सरकार से बाल कल्याण अवार्ड प्राप्त डॉ. प्रेमानंद एम. अम्बली, बीजापुर

मैं सन् 1962 से बीजापुर में प्रैक्टिस कर रहा हूँ। शिशु-रोग विशेषज्ञ हूँ। पूना-मुम्बई में मैंने अध्ययन किया। चूँकि बीजापुर में डॉक्टर्स की बहुत जरूरत थी इसलिए मैं वहाँ गया। मेरी प्रैक्टिस बहुत अच्छी चल रही थी। काफी संख्या में बीमार लोग मेरे पास आते थे। लेकिन जो गरीब थे, मेरी फीस नहीं दे सकते थे उनके लिए कुछ करने की तीव्र इच्छा मुझमें जागी। मैं कुछ समय निकाल कर इन गरीब लोगों की नि:शुल्क सेवा करने लगा। मुझे इस कार्य से बहुत आत्म-सन्तुष्टि मिलती थी। मैं मरीजों का तन ठीक करने के लिए दवा देता था परन्तु मुझे पता लगा कि ब्रह्माकुमारी संस्था मन ठीक करती है। कई बार डॉक्टर का व्यवहार तो अच्छा होता है परन्तु जो डॉक्टर के साथ रहते हैं वे ठीक रीति से व्यवहार नहीं करते हैं जिससे मरीजों को कष्ट होता है। यह बात मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाकर मालूम हुई। पन्द्रह वर्ष पहले मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम के सम्पर्क में आया। वहाँ पर जो बहनें थीं उन्होंने मुझे कार्यक्रमों में बुलाया। वे कहती थीं आपके सेवा कार्य में हम भी मदद करेंगे। मुझे आश्रम में आकर अच्छा लगने लगा। मैं जो कर रहा हूँ उसके लिए शक्ति मुझे यहाँ से मिलेगी, ऐसा मुझे अनुभव हुआ।

पहले हम 3 डॉक्टर्स की टीम बना कर जगह-जगह जाते थे। वहाँ हम लॉयन्स क्लब वालों की मदद से शिविर लगाते थे। वे सारी व्यवस्था करते थे। परन्तु कई बार व्यवस्था ठीक रीति नहीं हो पाती थी। परन्तु जब से हम ब्रह्माकुमारी आश्रम के सम्पर्क में आए, हर कार्य बहुत ही अच्छे ढंग से होने लगा। मरीजों को भी अच्छा लगता था। प्यार उन्हें ज्यादा मिल रहा था। इससे हम क्वालिटी और क्वान्टिटी दोनों सेवा करने लगे।

कई वर्षों से मैं चाहता था कि ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्यालय जाऊँ परन्तु दूसरी संस्थाओं के सम्पर्क में होने के कारण मैं बहुत व्यस्त रहता था। कई संस्थाओं के बड़े-बड़े पदों पर पहुँचने के बाद तथा कई अवॉर्ड प्राप्त करने के बाद मुझे लगने लगा कि परमात्मा ने मुझे कुछ अलग दिया है इसलिए मेरा मन आबू के प्रति अधिक प्रेरित होने लगा। यहाँ आकर मुझे ऐसा लगा जैसे कि तन एक अलग-सी ऊर्जा से भर गया है। सभी कहते हैं कि डॉक्टर साहब अब बस करो यह सेवा करना। अब आप 70

साल के हो गए हो। मुझे लगता है कि जितनी हम सेवा करते हैं उतना ही आराम मिलता है। सोना आराम नहीं, सोने से जंक लग जाता है।

मेरी युगल के भौतिकतावादी विचार थे। लेकिन धीरे-धीरे वह समझने लगी है कि भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता भी अनिवार्य है। वह भी मेरे साथ इस काम में जुड़ गई और उसे भी अच्छा लगने लगा। उसे गुस्सा बहुत आता था। यहाँ आने के बाद उसकी मनोवृत्ति ही बदल गई। वह अब शान्त रहने लग गई है। उसकी तबीयत भी ठीक रहने लग गई है। आबू का वातावरण उसे बहुत पसन्द आया। अब वह बोलती है कि आप जो चाहो वो करो, मैं आपके साथ हूँ। मैं परिवर्तन की बात सुनता था परन्तु अब मैं खुद के घर में ही परिवर्तन देख रहा हूँ। इतना सब देख कर मेरे मन में आता है कि मैं अब और सेवा करूँ। घर पर जैसे प्यार

मिलता है वैसे ही यहाँ भी वातावरण मिला है। मैं तो मरीजों को खुश रखने के बारे में सोचता था पर यहाँ पूरे जग को खुश रखने और परिवर्तन करने का कार्य चल रहा है। मैं बहुत मन्दिरों, सम्मेलनों आदि में गया हूँ परन्तु यहाँ जैसा प्यार और सेवा भाव कहीं भी देखने को नहीं मिला।

मैं सेवाकेन्द्र पर मास में दो-तीन बार मुरली सुनता हूँ। अब मैं यहाँ से संकल्प करके जा रहा हूँ कि रोज़ सेन्टर पर जाऊँ तथा ज्ञान-योग सीखूँ। कोई भी काम तब ठीक तरह से होता है जब व्यक्ति अपने को निमित्त समझ कर करे। भगवान मुझसे करवा रहा है, यह समझ कर चले। ब्रह्मा बाबा के तन में शिव बाबा के अवतरण के बाद उनके महावाक्यों से प्ररित होकर उस समय कुछ भाई-बहनें अपना सर्वस्व त्याग कर उनके मार्ग पर चले। अब कई लाख हैं जो इस मार्ग पर चल रहे हैं।

राजयोग से मेरी एकाग्रता बढ़ी है। मन भी शान्त रहने लगा है। जब बाबा ने इस संस्था की स्थापना की, उस समय कुछ लोगों ने ही बाबा का साथ दिया था। परन्तु अब यहाँ लाखों की संख्या में लोग आते हैं। मुझे विश्वास है कि बाबा ने जो यह काम शुरू किया, यह अवश्य पूरा होगा। सतयुग आयेगा परन्तु उसके लिए थोड़ा समय लगेगा। प्रकृति ने हमें जो कुछ भी दिया है वह मूल रूप में बहुत अच्छा है। परन्तु हमने उसे बहुत ही गन्दा कर दिया है। तत्वों को दूषित करते समय लगना चाहिए कि मैं किसी को मार रहा हूँ, मैं किसी की हत्या कर रहा हूँ। यह सब अगर हमारे अन्दर आ गया तो सृष्टि बदलने में समय नहीं लगेगा।

दो चीज़ें होती हैं, एक चेतन तथा दूसरी अचेतन। विज्ञान अभी तक अचेतन को चेतन नहीं कर पाया है। चेतन को अचेतन हम कर सकते हैं। यह चेतन सत्ता ही आत्मा है। आत्मा सभी प्राणियों में है। जब हम अच्छा कर्म करते हैं तो देवता कहलाते हैं और बुरा कर्म करते हैं तो राक्षस बन जाते हैं। **अपने तथा अपने परिवार के लिए तो हर कोई करता है परन्तु जरूरत है समाज के लिए कुछ करने की। समाज के स्वस्थ रहने के लिए लोगों का स्वस्थ रहना जरूरी है। स्वास्थ्य का अर्थ है तन-मन दोनों पूर्ण स्वस्थ हों। तन के लिए हम बहुत कुछ करते हैं पर मन को सकारात्मक चिन्तन और ईश्वरीय स्मृति के अभ्यास से ठीक रख सकते हैं।** जब मैंने प्रैक्टिस शुरू की थी उस समय मेरे पास ज्यादातर बच्चे ही पोलियो, टी.बी. आदि के मरीज के रूप में आते थे। उस समय 5 लाख बच्चे इन बीमारियों से मर जाते थे तथा 5 लाख बच्चे विकलांग हो जाते थे। इसके लिए हम गाँव-गाँव जाकर प्रतिरोधक शिविर लगाते थे। हमारा लक्ष्य था कि जितना हो सके बच्चों को बीमारी से बचाना। उस समय पूना की 4 साल की एक बच्ची को हृदय रोग था। हमने उसका इलाज कुछ लागों की मदद से किया। अब वह स्वस्थ है। यह सब देख कर बहुत अच्छा लगता है। सन् 1967 में हमने रक्त शिविर प्रारम्भ किए। उस समय रक्त तो मिलता ही नहीं था। लोगों को समझा कर उनसे रक्त लेते तथा जरूरत पड़ने पर उसे उपयोग में लाते थे। फिर हमने नया प्रोजेक्ट शुरू किया। उसका नाम रखा 'लॉयन्स रेड ब्रिगेड'। इसमें हम 1000 रक्तदाताओं का क्लब बनाते हैं जिन्हें हम कभी भी रक्त देने के लिए बुला सकते हैं। इसके बाद हमने 'आई बैंक' शुरू किया। आत्मा के शरीर छोड़ने के बाद शव की आँखें काम आ सकती हैं। इससे किसी भी पीड़ित व्यक्ति को आँखों की रोशनी मिल जाती है। ऐसे कई शिविर हमने प्रारम्भ किए। वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी हमने लाभप्रद कार्यक्रम शुरू किए। ब्रह्माकुमारी संस्था के माध्यम से परमात्मा का भी हमें बहुत सहयोग मिला है।

गतांक से आगे

बाबा ने निर्मल कन्याओं को शिव-शक्तियाँ बना दिया

– ब्रह्माकुमारी सीतू दादी, हापुड़

इसके बाद दो-तीन मास तक के समय में दादाजी का घर से मिलने के लिए आना होता रहा, कपड़े तथा पैसे भी वे स्नेह-सौगात के रूप में देते रहे। बाबा के कराची आने पर मेरे जैसी लगभग 80 कन्याएँ हैदराबाद छोड़, ज्ञानामृत पान के लिए कराची की ओर रवाना हुईं। विरोधियों के गले यह बात नहीं उतरी। उन्होंने कई कन्याओं के घरवालों से मिलकर उनके नाम वारंट निकलवा दिए। दोष यह लगाया गया कि कन्याएँ नाबालिग हैं। मैं 24 वर्ष की थी, मेरे लिए भी वारंट निकला। मैं अदालत में गई और पूछा कि वारंट किसने निकलवाया है। मेरी दादी गंगा स्नान का बहाना करके कराची आई थी और वारंट उसी ने निकलवाया था। दादाजी को वारंट आदि की जानकारी नहीं दी गई थी। वारंट में झूठ-मूठ मेरी आयु 12 वर्ष बताई गई थी। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने जज से पूछा – 'क्या आपको मैं 12 वर्ष की लगती हूँ?' बाबा ने मेरा वजन करके अदालत में भेजा था। मैं तन्दुरुस्त थी और 40 किलो वजन था मेरा। जज ने मुझे कहा कि तुम्हारी दादी कह रही है। जज के आदेश से मुझे घर जाना पड़ा। दादाजी ने मुझे देखते ही कहा कि क्या तुमको ओम मण्डली ने नहीं रखा। मैंने बताया कि दादीजी मुझे वारंट निकालकर ले आई है। दादाजी ने तब दादीजी के प्रति कहा – 'इस पापिन को तो नरक में भी जगह नहीं मिलेगी। मुझे तो कह रही थी कि मैं गंगाजी नहाने जा रही हूँ और गई है कन्या के ऊपर वारंट निकालने, अरे, कभी कन्या पर भी ऐसा किया जाता है क्या?' फिर मुझे सान्त्वना देते हुए कहा कि चलो, मैं तुमको वापस ओम मण्डली में छोड़ आता हूँ। परन्तु अदालत में मामला विचाराधीन होने के कारण बाबा के पास वापस लौटना लगभग 6 मास बाद ही हुआ। परन्तु फिर तो मैं पूर्ण निर्बन्धन हो गई। इस सारे प्रकरण में हमने जो बहादुरी दिखाई, वास्तव में, वह हमारी अपनी शक्ति न थी। यह सारी शक्ति और युक्ति कन्याओं के कन्हैया परमात्मा शिव की ही थी। बाबा के पत्र आते थे कि बच्चे, एक तीर में दो पंछी पकड़ो। इसका अर्थ यह था कि अपने को निर्बन्धन भी करो और परिवार वालों को राजी भी रखो। इस युक्ति से निर्बन्धन बन हम 14 वर्ष तक ज्ञान-योग की भट्ठी में रूहानी मौज करते रहे और ईश्वरीय चरित्रों से निहाल होते रहे।

सन् 1947 में भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ। चारों ओर खूने-नाहक खेल का भयंकर दृश्य मचा। पर प्यारे बाबा सदा याद की मस्ती में रहते थे और हमें भी उसी मस्ती में मगन रखने के लिए खूब भट्ठियों के कार्यक्रम करते रहते थे। कराची में 25-25 बहनों के समूह में भट्ठी होती थी। उस समय नौकर न थे। **ऐसी भट्ठी होती था। जो कोई किसी से भी बात नहीं करते थे। कोई किसी का चेहरा तक नहीं देखता था। रात को नींद न करके बारी-बारी योग करते थे। उन भट्ठियों की कमाल है जो हम उड़ती कला तक पहुँचे। मम्मा-बाबा भी हमारे साथ भट्ठी में आकर बैठते थे। 24 घण्टे भट्ठी चलती थी। भट्ठियों से भरी ताकत आज तक चल रही है, कराची में तो हम भट्ठियों में ही पले।**

विभाजन के समय सभी मुस्लिम भाइयों से प्यारे बाबा ने बहुत प्रेम का व्यवहार रखा परन्तु हम कन्याओं के मित्र-सम्बन्धियों ने बाबा पर दबाव डाला कि आप भारत चलो, हम आपका सारा खर्चा देंगे। उनके इस

कथन पर हम कराची से रवाना हुए, रास्ते में काफी तकलीफें हुई परन्तु महसूस नहीं हुईं। आबू आने पर 12 मास तक लाल चाय, बिना दूध की पीनी पड़ी। बेगरी पार्ट (धनाभाव का समय) में भोजन आदि की तंगी रही क्योंकि सारा पैसा कराची से आबू तक के सफर में खर्च हो गया था। भले ही एक प्रकार का भोजन मिलता था परन्तु कभी स्वाद याद नहीं आता था। काम पूरा हुआ और बैठे योग में अन्य कोई बात सोचते ही नहीं थे। बुखार हो जाता था तो प्यारा बाबा कहता था – 'जा बच्चे, शीशे में चेहरा देखो फिर योग में बैठो, बुखार उतर जाएगा।' सचमुच बुखार उतर जाता था, कभी दवाई नहीं खाई। उस समय बृज कोठी में सर्प होते थे पर हम मस्त रहते थे, एक बाबा की मस्ती में। दुनिया तो पूरी तरह भूली हुई थी। लौकिक की तो याद न तब आई न अब आती है। मन में समझ पक्की धारण की हुई है कि जिस प्रभु के बने हैं उसी का खाएँगे, पीएँगे, उसी का बनकर रहेंगे। बाबा के बन गए तो जो कुछ है सब बाबा का। मैं बाबा की, बाबा मेरा, यह धारणा मन्त्र जैसे शुरू से अपना हो गया था, यही जादू था। यह जन्म भी यज्ञकुण्ड से है, सेवा भी यज्ञकुण्ड से और स्वाहा भी यज्ञकुण्ड में ही होगा, ऐसा निश्चय है। सिन्ध में ठण्डी न थी परन्तु आबू में ठण्डी बहुत पड़ती है तो हम अधिकतर बीमार हो गए। डाक्टरों ने कहा – 'यहाँ चाय पीनी पड़ेगी और पैदल सैर भी करनी पड़ेगी।' पहले तो चाय को हम जानते भी नहीं थे। फिर हमने सुबह-सुबह चाय पीना और दो मील पैदल करना प्रारम्भ किया। उन दिनों बाबा ही सारे स्टॉक के सामान की देख-रेख करता था। बाबा के साथ मैं भी स्टॉक की सम्भाल में मददगार थी। एक दिन भोली भण्डारी ने मुझे कहा कि सांयकाल के भोजन के लिए पर्याप्त राशन नहीं है, खाना कैसे बनेगा। मैंने बाबा को बताया। बाबा ने कहा – बड़ी सहज बात है, बोर्ड पर लिख दो कि सांय चार बजे से नौ बजे तक योग है। कोई रसोई में जाएगा ही नहीं। प्यारा बाबा भी सांय चार बजे से योग में बैठ गया। अभी छः भी नहीं बजे थे कि डाकिया आया। एक बैरंग लिफाफा ले आया। भेजने वाले का नाम नहीं लिखा था। बाबा के कहने पर उसे खोला तो उसमें 200 रुपये निकले। बेगरी पार्ट में ऐसी गुप्त मदद अचानक मिलती थी।

एक दिन बाबा के साथ पहाड़ी पर घूमने गए थे तो देहली का एक नन्दकिशोर नाम का भाई भी वहाँ था। उसने सोचा कि ये सफेद कपड़े पहने हुए कौन हैं, जो ऊपर चढ़ रही हैं। उत्सुकतावश वह भी हमारे साथ हो लिया। सफेद कपड़े, लम्बे-खुले बाल, हमारा यह परिवेष थोड़ा अलग तो लगता ही था। वह भाई इससे प्रभावित हुआ और पहाड़ी पर से वापस लौटते समय हमारे साथ ही पाण्डव भवन के अन्दर तक आ गया। उसका परिचय पूछा, तो वह कहने लगा कि आप इतनी शान्ति की शक्ति का फैलाव यहाँ कर रहे हो, ऐसे ही दिल्ली में आकर भी करो तो बहुत अच्छा होगा। बाबा ने उसको कहा कि आप प्रबन्ध करना, हम अवश्य देहली में भी आएँगे। फिर उसी भाई के निमन्त्रण पर हमारी चार-पाँच दादियाँ देहली सेवा पर गईं। इस घटना के बाद बाबा हम अन्य सभी को भी धीरे-धीरे बाहर सेवा पर भेजने लगा। एक दिन क्लास में प्यारे बाबा ने कहा कि आप सभी को जाना ही है सेवा पर। प्यारे बाबा ने प्रसिद्ध आख्यान महाभारत की उस घटना का उदाहरण दिया जब पाण्डवों ने गुप्तवेश में राजा विराट के यहाँ नौकरी की थी और कहा कि आप शिवशक्ति पाण्डव सेना को भी गुप्तवेश में सेवा का पार्ट बजाना ही है । हमने कहा – 'बाबा, हमारा तो आपके साथ एक ही वायदा है कि साथ जीएँगे, साथ मरेंगे, साथ रहेंगे, हम तो

जाएँगे नहीं।'

युक्ति से सेवा पर भेजा

भगवान जानीजाननहार है और हरेक आत्मा से सेवा करवाने की विधि तथा युक्ति सम्पूर्ण रूप से जानता है। हमारे प्रति उन्होंने एक आकर्षक युक्ति अपनाई। प्रात:काल क्लास में कहा कि जिन बच्चियों ने हवाई जहाज तथा 26 जनवरी का उत्सव न देखा हो वे हाथ उठाएँ। हम छह बहनों ने हाथ उठाया। बाबा ने हमें देहली में भेज दिया। मुझे प्रवचन करने का सुअवसर मिला, लोगों ने ध्यान से सुना और अच्छी सेवा हुई, तो भाई ने बाबा को समाचार लिख भेजा। इस सेवा के परिणामस्वरूप मुझे वहीं देहली में सेवार्थ रख लिया गया।

जब दिल्ली में आए थे तो आटे में नमक डालते थे, दो रोटी बनाते थे और सुबह चाय के साथ खाकर निकलते थे। कभी किसी के घर सत्संग करते थे, कभी किसी के घर। रात तक कई स्थानों पर सेवा करके, फिर लौटते थे। रात को आकर सस्ते आलू लाते थे, खूब पानी डालकर रस वाले बनाते थे, प्यार से भोग लगाकर सन्तुष्टता से खाते थे। यदि किसी ने आना, पैसा, रुपया कभी दिया तो महायज्ञ में भेज देते थे। यज्ञ में इस प्रकार तन, मन, धन लगाने से शक्ति बहुत मिलती थी। प्यारे बाबा ने हम निर्मल कन्याओं को इसी युक्ति से शक्तियाँ बना दिया। मेरा लौकिक भाई, भाभी को कहता था कि हमारी यह बहन ऐसी थी, जो पुलिस वाले का नाम सुनते ही खटिया के नीचे छिप जाती थी परन्तु आज यह हज़ारों के सामने भाषण करती है निडरता से। लेकिन यह किसकी शक्ति है। महीन बुद्धि से विचार करने पर ही समझ में आता है कि यह साकार बाबा के तन में विराजमान शिव पिता की ही शक्ति कार्य कर रही थी, अब भी कर रही है।

रूहानी सर्जन का अनोखा इलाज

मैं आबू में आने पर एक वर्ष तक डायरिया से पीड़ित रही। यहाँ तो इतने डॉक्टर थे नहीं, प्यारे बाबा ने मुम्बई से डॉक्टर को बुलवाया। उसने कहा – इनकी शादी करा दो तो ये ठीक हो सकती हैं। उसने यह भी कहा कि ये बच नहीं सकती। मुम्बई अस्पताल में भर्ती होकर इलाज कराने की सलाह दी। मैंने कहा – शादी तो कराओ किसी और की, रही बात ठीक होने की, यदि मरना होगा तो मुम्बई में जाकर भी शरीर छूटेगा, इससे तो यहीं पवित्र स्थान पर शरीर छूटे तो अच्छा है। उन दिनों दादी जानकी जी यज्ञ में नर्स की सेवा करती थी। एक दिन मेरी बहुत गम्भीर हालत को देख उसने बाबा को कहा कि बाबा, सीतू तो आज रात भी नहीं निकालेगी, सुबह तक बचने की उम्मीद नहीं है। मेरा सारा शरीर और मुख सूज गया था। बाबा ने उत्तर दिया – बच्ची, तुम सो जाओ, बाकि बाबा जाने यह जाने। रात को ढाई बजे बाबा मेरे पास आया और पूछा – बेटी, कितने दिनों से नींद नहीं की है? मैंने कहा – बाबा, खाना तो खाती नहीं हूँ, नींद कैसे आए। बाबा ने 10 मिनट शक्तिशाली दृष्टि दी और फिर दादा विश्वरतन जी से उसी समय अर्थात् रात के ढाई बजे गाय का दूध मँगवाया। उस कच्चे दूध को इन्जेक्शन्स में भरकर मेरी दोनों बाँहों में लगा दिया गया। इससे मुझे कई दिन बाद गहरी नींद आई। सुबह फिर बाबा के दिए कार्यक्रम के अनुसार कई प्रकार के फलों का रस मिलाकर पीती रही। फिर बाबा ने अपने साथ भोजन की एक-एक ग्राही खिलाना प्रारम्भ किया। इस प्रकार पूर्ण स्वस्थ हो गई। अब 84 वर्षों की हो गई हूँ और कई स्थानों पर सेवा करने के बाद वर्तमान समय हापुड़ में सेवा पर उपस्थित हूँ।

(समाप्त)

करुणा की भाषा

– ब्रह्माकुमारी ललिता, नागपुर (महाराष्ट्र)

कई लोग, कई बार इस प्रकार की शेखी बघारते रहते हैं कि उन्हें बहुत-सी भाषाएं आती हैं। कई भाषाओं में पारंगत होना बौद्धिक क्षमता का प्रतीक है परन्तु दिमाग से नहीं दिल से समझी जाने वाली भी कुछ भाषाएं होती हैं। वे हैं – प्रेम की भाषा, करुणा की भाषा, सहानुभूति की भाषा। जो इन भाषाओं को जानता है, वही सच्चा ज्ञानी है और ईश्वर के करीब है। परमात्मा पिता भी प्रेम और करुणा के सागर हैं। वे हम बच्चों को भी अपने समान देखना चाहते हैं। प्रस्तुत कहानी में बड़े सुन्दर ढंग से इस बात को समझाया गया है –

किसी वन के आश्रम में एक ऋषि अपने शिष्य पारंगत के साथ रहते थे। पारंगत एक आज्ञाकारी शिष्य था। एक दिन ऋषि बोले – "वत्स पारंगत, तुमने बहुत समय तक मेरी सेवा की है। इस अवधि में मेरे पास जो कुछ भी ज्ञान था, वह सब मैंने तुम्हें सिखला दिया है। मैं बहुत समय तक इसी आश्रम में रहा। इस कारण मैं मात्र दो ही भाषाएं सीख पाया हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम अनेक स्थानों का भ्रमण करो। इस अवधि में तुम संसार की अधिकाधिक भाषाएं सीख कर वापस आओ।" आज्ञाकारी पारंगत देशाटन पर निकल पड़ा। उसने मन ही मन संकल्प लिया – "मैं संसार की अधिक से अधिक भाषाएं सीख कर वापस लौटूँगा।" पारंगत नए-नए स्थानों से गुजरता रहा। लगभग दस वर्ष बीत गये। उसने संसार की अनेक भाषाएं सीख लीं और कुछ धन भी इकट्ठा कर लिया। सब कुछ लेकर वह गुरु के आश्रम की तरफ चल पड़ा।

एक लंबी यात्रा के पश्चात् वह आश्रम के समीप जा पहुँचा। उसने उत्साहपूर्वक आश्रम में प्रवेश किया परन्तु यह क्या! गुरुजी रुग्णावस्था में शैय्या पर पड़े थे। यह देखकर उसे थोड़ा दु:ख तो पहुँचा लेकिन उत्साह में कोई कमी नहीं आई। उसने गुरु को प्रणाम किया और अपनी बात छेड़ दी – "गुरुजी! अब आपका शिष्य वह पारंगत नहीं रहा बल्कि बहुत कुछ सीख आया है।" ऋषि शान्त भाव से सुनते रहे। फिर अपने टूटते हुए स्वर को संयत कर बोले – "वत्स पारंगत! क्या तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दोगे?" "क्यों नहीं गुरुजी! आप आज्ञा तो कीजिए।" ऋषि बोले – "पुत्र! तुमने बहुत सारे स्थानों का भ्रमण किया है। क्या तुम्हें इन स्थानों पर कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई दिया जो बेबस, लाचार होकर भी दूसरों की मदद कर रहा हो? तुम्हें कोई ऐसी माँ मिली जो अपने शिशु को भूखा देखकर अपना दूधरहित स्तन उसे पिला रही हो?" "ऐसे लोग तो पूरे संसार में मिले थे गुरुजी!" – शिष्य उत्साहित होकर बोला। "क्या तुम्हारे मन में उनके लिए सहानुभूति जागी? क्या तुमने उनसे प्रेम के कुछ शब्द कहे?"

ऋषि का ऐसा प्रश्न सुनकर पारंगत सकते में आ गया। उसे ऋषि से ऐसे प्रश्न की कदापि आशा न थी। वह बोला – "गुरुजी! मैं तो आपकी आज्ञा का पालन करता रहा। मुझे इतना समय कहाँ था, जो मैं यह सब करता। इतने वर्षों में मैंने पाँच सौ भाषाएं सीख ली हैं।" इतना कहकर पारंगत ने गुरु की तरफ देखा और पाया कि उनके मुख पर एक रहस्यमयी मुस्कान आकर चली गयी। ऋषि बोले – "वत्स **पारंगत! तुम अब भी प्रेम, सहानुभूति और करुणा की भाषा में अपारंगत हो। यदि ऐसा न होता तो तुम दु:खियों का दु:ख देख मुँह न फेर लेते। इतना ही नहीं, तुम्हें अपने गुरु की रुग्णावस्था भी नहीं दिखाई पड़ी। तुमने मेरा कुशल-क्षेम जाने बिना ही अपनी कहानी छेड़ दी।**" इतना कहकर गुरु कुछ क्षणों के लिए रुके। उनका हृदय बैठा जा रहा था। वे अपने हृदय को संयत कर पुन: बोले – "पारंगत! मैंने तुम्हें जिस उद्देश्य से देशाटन पर भेजा था, वह पूरा नहीं हुआ। **मैं तुम्हें करुणा की भाषा सिखाना चाहता था। हो सके तो यह भाषा भी अवश्य सीख लेना।**" इतना कहकर गुरुजी सदा के लिए शांत हो गए। पारंगत को भाषा सीखने का अर्थ समझ में आ गया। उसने अपने आपको करुणाशील और प्रेमस्वरूप बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया। ▲▲

1. रामनगर- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद विधायक भ्राता योगेन्द्र सिंह रावत, ब्लॉक प्रमुख भ्राता शिवराज सिंह रावत, ब्र.कु. नीता बहन, ब्र.कु. विरेन्द्र भाई तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। 2. हाथरस- जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता अशोक कुमार रस्तोगी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. भावना बहन। साथ में हैं ब्र.कु. श्याम पचौरी भाई। 3. करनाल (सदर बाजार)- जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता आर.सी. गुप्ता जी तथा बहन गुप्ता को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. किरण बहन। 4. जालन्धर- ब्र.कु. राज बहन को गढ़वाल समिति की धर्मगुरु 108 दमयन्ती दास जी महाराज व प्रधान भ्राता राजेश शर्मा जी सम्मानित करते हुए। 5. भीनमाल- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जिला प्रमुख भ्राता नारायण सिंह देवल, अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मैजिस्ट्रेट भ्राता अजय कुमार भोजक, ब्र.कु. रामलोचन भाई, ब्र.क. रंजू बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन। 6. नानौता- प्रख्यात कथावाचिका बहन नागेश्वरी देवी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सुधा बहन तथा ब्र.कु. सुषमा बहन। 7. भादरा- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता यादव जी तथा उपखण्ड अधिकारी भ्राता हर्ष सहाय मीणा जी। साथ में हैं ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन तथा अन्य। 8. पाँवटा साहिब- उपायुक्त भ्राता एम.एल. शर्मा जी, ब्र.कु. सरिता बहन से ईश्वरीय सौगात स्वीकार करते हुए।

1. जयपुर (वैशाली नगर)- 'नए युग के लिए नया ज्ञान' विषयक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए स्टेट बैंक ऑफ जे एण्ड बी के महाप्रबन्धक भ्राता एस.के. घई, उपमहानिरीक्षक भ्राता आर.डी. गोयल, भारत विकास परिषद् के अध्यक्ष भ्राता आर.डी. डंगायच तथा ब्र.कु. सुषमा बहन। **2. मुगलसराय**- क्षेत्रीय रेलवे प्रबन्धक भ्राता आर. विजय मोहन तथा महिला कल्याण अध्यक्षा बहन विजयलक्ष्मी मोहन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरोज बहन। **3. अम्बाला शहर**- आध्यात्मिक कार्यक्रम में ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. सुनीता बहन। साथ में हैं स्वामी ज्ञानानन्द जी तथा ब्र.कु. सरोज बहन। **4. छपरौली (बड़ौत)**- जैन मुनियों को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. गीता बहन। **5. शमसाबाद (आगरा)**- सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी बहन पद्मासिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। **6. राजसमंद**- तनावमुक्ति शिविर का उद्घाटन करते हुए महिला मण्डल की अध्यक्षा बहन मधु पगरिया, ब्र.कु. रीटा बहन, ब्र.कु. पूनम बहन तथा समाज सेवक भ्राता सतीश पगरिया जी। **7. हाथरस (आनन्दपुरी)**- जिला पंचायत अध्यक्षा बहन सीमा उपाध्याय को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित करती हुई ब्र.कु. शान्ता बहन। **8. बड़पुर (फतेहपुर)**- उद्योग विभाग के उप-निदेशक भ्राता जे.एन. त्रिपाठी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शर्णिमा बहन। **9. टोंक**- विद्यालय में 'नैतिक शिक्षा' विषयक प्रवचन देते हुए ब्र.कु. भगवान भाई। साथ में हैं प्रधानाचार्य जी तथा शिक्षकगण। **10. झालावाड़**- मेला अधिकारी डॉ. भ्राता वी.बी. माथुर को ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुई ब्र.कु. मीना बहन। साथ में डॉ. भ्राता करीम जी भी हैं।

1. जालोर- लुनी गाँव में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी की व्याख्या, प्रधान भ्राता केसाराम चौधरी तथा अन्य गणमान्यजनों के समक्ष करती हुई ब्र.कु. रंजू बहन। 2. झींझक (गोविन्दनगर, कानपुर)- नए सेवास्थान का उद्घाटन करते हुए उद्योगपति भ्राता धुनुसिंह गौर। साथ में हैं ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. स्मिता बहन तथा अन्य। 3. सिरसा (सद्भावना भवन)- गाँव पन्नीवाला मोटा में ग्राम विकास कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं सरपंच बहन नारायण देवी, ब्र.कु. विजय भाई, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. कृष्णा बहन तथा ब्र.कु. बिन्दु बहन। ब्र.कु. लक्ष्मी बहन विचार व्यक्त करते हुए। 4. जगराओ- एस.एच.ओ. भ्राता महिन्दर पाल को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. हरबंस बहन। 5. फिल्लौर- 'जीवन मूल्य' विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. राकेश भाई। 6. गुड़गाँव- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी की व्याख्या करते हुए ब्र.कु. योगप्पा भाई पटेल। 7. नागौर- सुरक्षाबल के जवानों को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. अनीता बहन। 8. गोरखपुर- जेल अधीक्षक भ्राता बी.के. जैन जी, ब्र.कु. पुष्पा बहन को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित करते हुए।

1. चण्डीगढ़ (सेक्टर 33)- युवा महोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. अचल बहन, आई.जी.पी. भ्राता राजेश कुमार, हरियाणा के युवा एवं खेल संयुक्त सचिव भ्राता ओ.पी. लांगायन, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य। **2. लुधियाना**- लुधियाना मैनेजमेंट एसोसिएशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अमीरचन्द भाई। ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल भाई, ब्र.कु. आशा बहन तथा महासचिव भ्राता वी.के. गोयल भी मंच पर विराजमान हैं। **3. चरखी दादरी**- 'रीयल स्पोर्ट्स मैन' विषयक सेमिनार के बाद समूह चित्र में हैं भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष भ्राता रणबीर सिंह महेन्द्रा, ब्र.कु. प्रेम बहन, ब्र.कु. जगवीर भाई तथा अन्य खिलाड़ी। **4. रिवाड़ी**- पुलिस अधीक्षक भ्राता हमीद कुरैशी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. दर्शन बहन। **5. सादड़ी**- विधायिका बहन लक्ष्मी वारुपाल को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. शुचिता बहन। **6. बिजौलिया (भीलवाड़ा)**- किसान आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. आरती बहन, ब्र.कु. राजू भाई, विधायक भ्राता कन्हैया लाल धाकड़, ब्र.कु. इन्द्रा बहन तथा अन्य। **7. पुरुवाला (हि.प्र.)**- ग्राम विकास आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए विधायक भ्राता सुखराम जी। साथ में हैं ब्र.कु. सुमन बहन, ब्र.कु. तारा बहन तथा अन्य। **8. हमीरपुर**- विधायिका बहन अनीता वर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail: gyanamrit@vsnl.com Ph.No.: (02974) 228125, 228126 bkatamad1@sancharnet.in

1. **देहरादून-** उत्तरांचल के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता तिलकराज बेहड़ को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन तथा ब्र.कु. मीना बहन। 2. **अमरोली-** नि:शुल्क चिकित्सा शिविर के उद्घाटन अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए लोकदृष्टि चक्षु बैंक के प्रमुख डॉ. प्रफुल्ल भाई। सौराष्ट्र वि.वि. के उप-कुलपति जयेश भाई, ब्र.कु. तृप्ति बहन तथा अन्य भी मंच पर विराजमान हैं। 3. **छोटा उदेपुर (गुज.)-** गुजराती फिल्म अभिनेत्री बहन किरण पण्डिया जी, फिल्म निर्माता भ्राता शबीर जी तथा भ्राता चिराग जी के साथ ज्ञान-चर्चा करने के पश्चात् ब्र.कु. मोनिका बहन तथा ब्र.कु. आशा बहन ईश्वरीय स्मृति में। 4. **तौलिहवा-** नेपाल के पर्यटन, संस्कृति तथा उड्डयन मंत्री भ्राता दीप कुमार उपाध्याय को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. परमेश्वरी बहन तथा ब्र.कु. चन्द्रा बहन। 5 **फर्रूखाबाद (अढतियान)-** उ.प्र. के स्वास्थ्य राज्यमंत्री भ्राता जयवीर सिंह भदौरिया को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन। साथ में हैं ब्र.कु. रागनी बहन। 6. **शिलांग-** मेघालय के खेलमंत्री भ्राता पॉल लिंगदोह ईश्वरीय सौगात ग्रहण करने के बाद ब्र.कु. नीलम बहन तथा अन्य के साथ। 7. **बांदा-** उ.प्र. के खादी मंत्री भ्राता के.के. दीक्षित जी से ज्ञान-चर्चा करने के बाद, पुलिस अधीक्षक भ्राता जकी अहमद को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. गीता बहन तथा ब्र.कु. पुष्पा बहन। 8. **मुम्बई-** लॉयन्स क्लब की मीटिंग में मंच पर विराजमान हैं सचिव भ्राता अशोक मोहनानी, डिप्टी गवर्नर भ्राता सुदर्शन नायर, गवर्नर बहन अरुणा ओसवाल तथा ब्र.कु. दिव्या बहन।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.

1. नागपट्टिनम- सुनामी पीड़ितों को राहत सामग्री बाँटते हुए ब्र.कु. करुणा भाई तथा ब्र.कु. शान्ता बहन। **2. सांताक्रुज-** लेबिरिन्थ में पीस वॉक करते हुए (दायें से बायें) - लैंडस्केप सलाहकार भ्राता एस. कुमार शाह, खेल तथा युवा मामलों के केन्द्रीय मंत्री भ्राता सुनील दत्त जी, ब्र.कु. मीरा बहन, विधायक भ्राता अशोक भाऊ जाधव तथा पूर्व विधायक भ्राता रमेश प्रभु। **3. आबू रोड (शान्तिवन)-** श्रमिकों को कम्बल बाँटती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी। **4. बलंगा-** प्रेम-एकता-सद्भावना महोत्सव का उद्घाटन करते हुए गजपति महाराजा श्री श्री दिव्यसिंह देव, पूर्व मंत्री भ्राता अरविंद ढाली, ब्र.कु. संदेशी दादी तथा अन्य। **5. हैदराबाद (शान्ति सरोवर)-** विशाल युवा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए आंध्र प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता सुरेश रेड्डी, उच्च शिक्षामंत्री भ्राता वेंकटेश्वर राव, सांसद भ्राता राजगोपाल जी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. चंद्रिका बहन, ब्र.कु. कुलदीप बहन तथा ब्र.कु. कमलेश बहन। **6. काठमांडू-** नेपाल में 251 धार्मिक तथा अन्य संघ संस्थाओं द्वारा आयोजित राष्ट्र कल्याण शान्ति अभियान का दीप प्रज्वलित कर सर्व धर्मगुरुओं की उपस्थिति में उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ में हैं ब्र.कु. सूरत भाई। **7. गोहाटी-** युवा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए (बायें से दायें) असम ट्रिब्यून समूह के अध्यक्ष भ्राता टी.जी. बरुआ, ब्र.कु. शीला बहन, असम के मुख्यमंत्री भ्राता तरुण गगोई, ब्र.कु. चन्द्रिका बहन तथा अन्य।